Savoir sans Frontières

आर्चीबाल्ड हिगिन के रोमांचक कारनामे

(अर्थशास्त्र)

Jean-Pierre Petit

http://www.savoir-sans-frontieres.com

लेखक के विषय में

द एसोसिएशन नॉलिज विदआउट बोड्र्स की स्थापना और अध्यक्षता खगोलशास्त्री प्रोफेसर जीन पियरे पेटिट ने अधिकांश देशों में और अधिकतर भाषाओं में विज्ञान और तकनीकी जानकारी के प्रसार के उद्देश्य से की थी। इस उद्देश्य के लिए उनके समस्त विज्ञान संबंधी लेख, जिन्हें उन्होंने 30 वर्ष में तैयार किया था और उनके द्वारा तैयार विशेषतः सचित्र एलबम आज सभी के लिए उपलब्ध हैं। उपलब्ध फाइल से डिजिटल में अथवा प्रिंटेड कॉपियों के रूप में डुपलिकेट बनाई जा सकती है और एसोसिएशन के उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए स्कूलों अथवा विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में भेजी जा सकती है यद्यपि इसका अर्थ राजनीतिक अथवा और कोई न हो। इन पी.डी.एफ. फाइलों को स्कूलों व विश्वविद्यालयों में पुस्तकालयों के कम्प्यूटर नेटवर्क पर रखा जा सकता है।
जीन पियरे पेटिट ऐसे अनेक कार्य करने चाहते हैं जो अधिकांश लोगों तक उपलब्ध हो सकें। निरक्षर व्यक्ति भी इन्हें समझ सके। क्योंकि जब पाठक उन पर क्लिक करेंगे तो लिखित भाग स्वयं बोलेंगे। इस प्रकार ये कार्य साक्षरता योजनाओं में सहायक होंगे। दूसरी एलबम द्विभाषी होंगी और मात्र एक क्लिक करने से ही एक भाषा से दूसरी भाषा का चुनाव हो सकेगा। इसी प्रकार एक मंत्र उपलब्ध किया जाएगा जो भाषायी कुशलता विकसित करेगा।

जीन पियरे पेटिट का जन्म 1937 में हुआ था। उन्होंने फ्रेंच में शोध कार्य किया। उन्होंने प्लाजमा भौतिकीविद् के रूप में कार्य किया, उन्होंने कम्प्यूटर साइंस सेंटर का निर्देशन किया, उन्होंने साफ्टवेयर्स तैयार किए हैं, उनके सैकड़ों लेख विज्ञान पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं जिनमें उन्होंने द्रव अभियांत्रिकी से लेकर सैद्धांतिक सृष्टिशास्त्र पर लिखा।

निम्नलिखित वेब साइट के माध्यम से एसोसिएशन से संपर्क स्थापित किया जा सकता है-

http://savoir-sans-frontieres.com

इस कॉमिक बुक का फ्रेंच से अंग्रेजी में अनुवाद श्री 'यूवी मार्क एमेलाइन' ने किया। फ्रांस-पेरिस हिंदी अनुवादिका-रचना भोला 'यामिनी'।

बहुत समय पहले बोरडेरिया में...

हम ये बर्तन बनाते हैं।

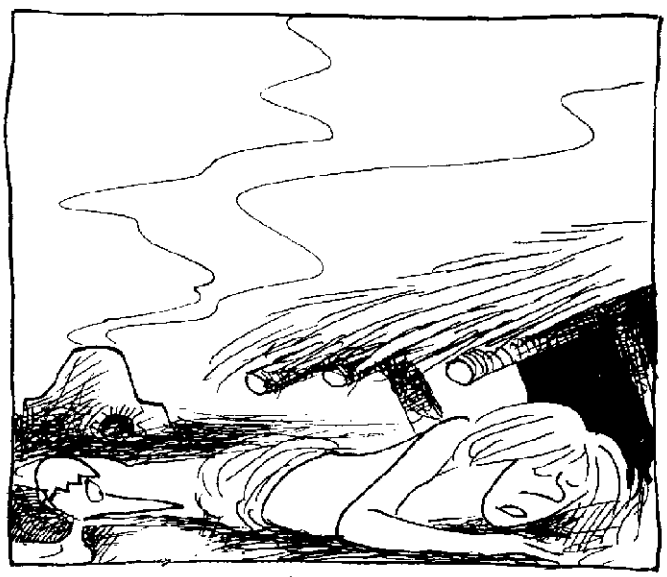

भई! जरा आराम से खड़े रहो।
मुझे माल लादने में मुश्किल हो रही है।

अरे! वो पुराने क्रोमिर आए हैं।

अदला-बदली।

अच्छा चलो! एक बर्तन के बदले में चार मछली दे दो।
नहीं छः!
वो लोग जरा दाम तय कर रहे हैं।
तुम तो ठीक हो न!
लेकिन वो मछलियां मैंने उसके लिए पकड़ी थीं।

... और इस तरह उसने मुझे भूखा मरने के लिए छोड़ दिया पर मैं क्या करती। नदी क्रोमिर जाति की है और मैं एक तियुल हूं। नियम के अनुसार भगवान केफल ने नदी उन्हें ही दी है।

हां! मैं जानता हूं क्योंकि बोरडेरिया में भी ऐसा ही है।

ये लो!

इसी तरह जीवन चलता रहा। बोरडेरियावासी अपने बनाए बर्तनों के बदले क्रोमिरों से मछलियां ले लेते। दक्षिणी पोलकों से मिले नमक के बदले वे उन्हें सुखाई हुई मछलियां देते....

एक दिन...

मूर्ख लड़के! तुम्हें क्रोमिरों के पास अकेले ही बर्तन लेकर जाना होगा लेकिन हो सकता है कि वे तुम्हें ठगने की कोशिश करें इसलिए मैं तुम्हें गिनती सिखाऊंगा।

क्या सिखाएंगे...?

मैं तुम्हें ऊंगलियों का रहस्य सिखाने जा रहा हूं। बेवकूफ! क्या तुम अपने हाथ देख सकते हो? हर हाथ में ऊंगलियां हैं और इन ऊंगलियों में पोर भी हैं?

अगर मुझे क्रोमिरों के धोखे का डर न होता तो मैं यह विद्या तुम्हें कभी न सिखाता।

और मुझे धोखा खाना बिल्कुल पसंद नहीं है।

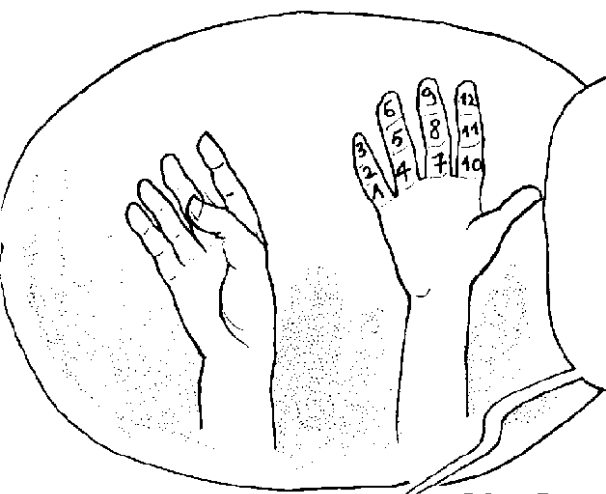

देखो, तुम अपने अंगूठे की मदद से इन पोरों को गिन सकते हो। यह गिनती में बारह हैं यानी पूरे दर्जन। इन्हें तुम पेड़ के तने पर लिख सकते हो।

यह राज किसी को मत बताना नहीं तो भगवान तुम्हें सजा देंगे और तुम्हें मुझे जवाब देना होगा।

...और अगर मुझसे चालाकी की तो मैं तुम्हारी खाल उतरवा दूंगा।

मुद्रा का जन्म।

तुम्हारा जिब्रू कहां है?
वो नहीं आ सके।
पांव-भूत ने उन पर हमला कर दिया है।
अच्छा! मछलियां कहां है?
बस, अब तो यही बची हैं।
दक्षिणी पोलक आए थे। वे लोग युद्ध की तैयारी में थे इसलिए तकरीबन सब कुछ ले गए।
...पर मैं क्या करूं? मैं इन बर्तनों को वापिस नहीं ले जा सकता।

मेरे पास उससे भी कुछ बेहतर है। लोहे की इस छोटी सी वस्तु को देखो। इस एक के बदले में एक मछली ली जा सकती है।

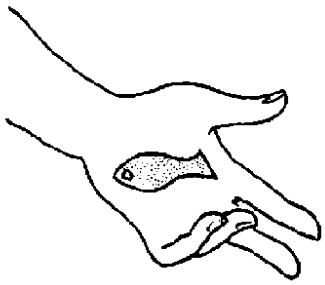

मैं इन्हें देख सकता हूं पर अपने मालिक से क्या कहूंगा। वो मछलियों के बदले इतनी छोटी वस्तु नहीं लेगा।

आजकल यही लोहे की मछलियां चलन में हैं। दक्षिणी पोलक तो इनके बदले में भोजन भी खरीदते हैं। शिकारी इनसे बानों के नुकीले सिरे बनाते हैं। वैसे इसे पिघलाकर और भी बहुत सी चीजें बन सकती हैं।

माफ कीजिए, मैं इन पर विश्वास नहीं कर सकता। ये देखने में तो सुंदर हैं पर मेरी पिटाई का कारण बन सकते हैं।

फिर तुम अपने बर्तनों का हिसाब कैसे बनाओगे? यह तरीका तुम्हारे जीवन को आसान बना देगा जैसे एक वस्तु-एक मछली।

इस तरह तुमसे कोई गलती नहीं होगी। जब तुम उन्हें हार की तरह पिरो कर गले में पहन लोगे तो राह में खोने का डर भी नहीं रहेगा। कुछ भूमध्यवर्ती (मेडीतेरेनियम) गाँवों में भी काफी समय पहले यही होता था।

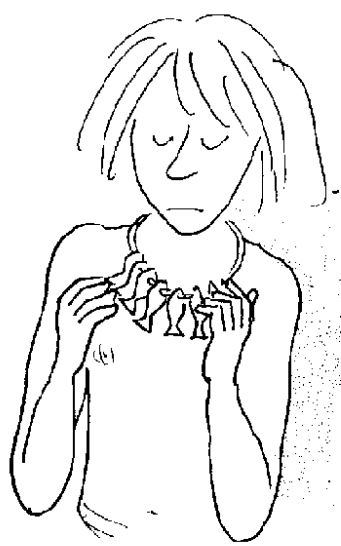

शुक्र है! यह कम से कम भार में तो हल्की हैं।
अच्छा! उस क्रोमिर ने तुम्हें यह सब दिया?
जी! उसने यह भी कहा है कि इसका भी उतना ही मूल्य है। आसपास के इलाके में जाने से आपको इस सच्चाई का एहसास हो जाएगा।
याद रखो! अगर मुझसे झूठ बोला तो तुम्हारी खैर नहीं।
अरे वाह! जिन तायाकों ने मेरे बर्तन लेने से मना कर दिया था, वे तो लोहे की मछलियों के दीवाने हैं। बदले में मैं मांस और रोएंदार खाल लाया हूं।
उन्होंने मुझे पांव-भूत से छुटकारा पाने की दवा भी दी।
हूं... तो बढ़िया रहा।

इस तरह वस्तुओं के आदान-प्रदान का तरीका खत्म हुआ। जिब्रू लोग मांस के बर्तनों के बदले शराब के लिए धातु के इन टुकड़ों का इस्तेमाल करने लगे। यह धातु के टुकड़े धन का ही एक रूप थे।

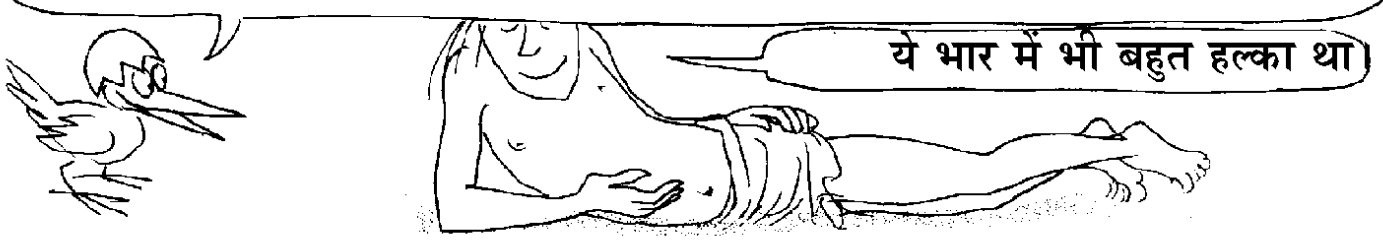

उपभोक्ता सभ्यता।

मैंने फैसला कर लिया है। तुम्हें ढ़ेरों बर्तन बनाने होंगे ताकि उससे ताजी मछली की बजाए वो छोटी वस्तु ली जा सके। फिर मैं उनसे बहुत सारा मांस और दवा खरीदूंगा।

भई! इससे तुम्हें क्या फायदा हुआ! तुम्हें तो तिगुने बर्तन बनाने पड़े। जितनी जरूरत है उससे कहीं ज्यादा।

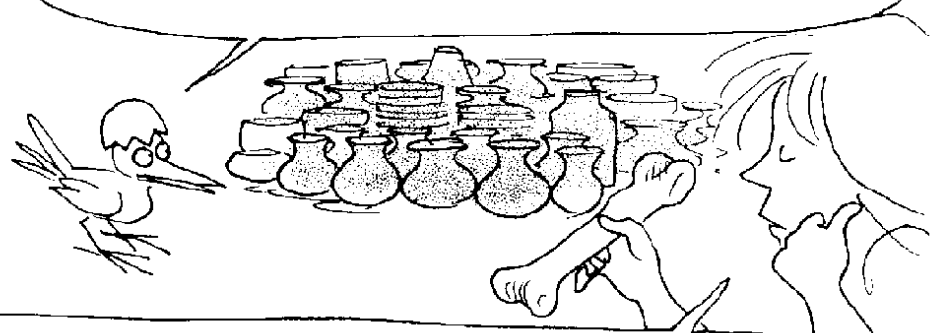

हां... मछली की हड्डी चूसने की बजाए मुझे मांस की हड्डी मिलेगी। बस... और क्या!

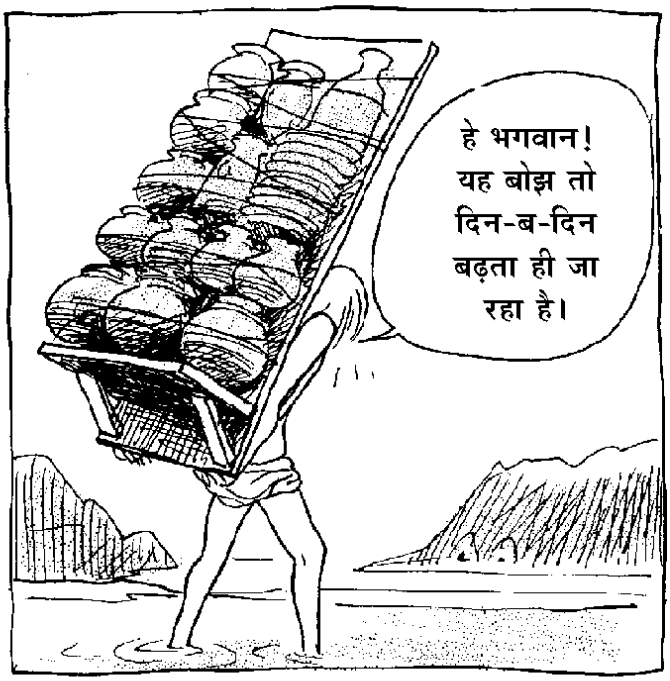

दक्षिणी पोलक बिना किसी वजह के लड़ते रहते थे। इस तरह उन्होंने राजा न्यूमिस को नाराज कर दिया। राजा ने उनके राज्य पर कब्जा कर लिया और सबको सूली पर लटकाने का हुक्म सुना दिया। धातु की छोटी मछलियों ने उसका दिल जीत लिया। अब धातु की सारी खानें उसके कब्जे में हैं और वो हर टुकड़े पर अपना नाम व मुहर खुदवा रहा है।

पोलकों की खोज 'धन' तो सचमुच कमाल की है। इससे तो हम पूरी दुनिया खरीद सकते हैं।

पूरी, दुनिया ही क्यों, हम पूरा ब्रह्माण्ड खरीद सकते हैं।

तुमने बिल्कुल ठीक कहा, चलो ऐसा ही करें।

सोफिया! हमारा धंधा जोरों पर है। मुझे राजा न्यूमिस से बहुत सारे आर्डर मिले हैं। उसने सभी धरतीवासियों को अपने यहां खाने पर बुलाया है। उसे भारी मात्रा में सुखाई हुई मछलियां चाहिए।

हमें मछलियां पकड़ने का काम तेजी से करना होगा। अगर तुम एक बड़ा सा जाल बुन सको जिसे हमें मछलियां पकड़ने में आसानी होगी।

वाह! मेरा प्यारा धन।

...और आर्चीबाल्ड को बोरडेरिया के जिब्रू के लिए भारी संख्या में बर्तन बनाने पड़ते थे।

(*) 12×12×12 = 1728

क्या हुआ! मालिक।
वो तायाक... उन्हें अब
लोहे की मछलियां नहीं चाहिए।

ये लो अपने सड़े हुए बर्तन
मुझे तो असली मछली चाहिए।

अगर ज्यादा जोर देते हो तो तुम्हें मुझे
एक बर्तन के लिए चार हाथ टुकड़े देने होंगे।
चार हाथ?
क्या तुम पागल हो गए हो?

थोड़ी ही देर में।
राजा ने तुम्हें बुलाया है।
अपने राजा से कहो।

तुमने सैनिकों से क्या कहा।
एक मछली के लिए
टुकड़ों के चार हाथ!!
इसे सूली पर लटकाओ।

महाराज शांत रहें!
गुस्से से बात नहीं बनेगी।
आइए, मैं आपको समझाने की कोशिश
करता हूं कि आखिर हुआ क्या था।

दक्षिणी पोलकों ने
इस धन की खोज
की। यह व्यावहारिक
भी था लेकिन अब
भी कुछ बातें और
बस में नहीं।

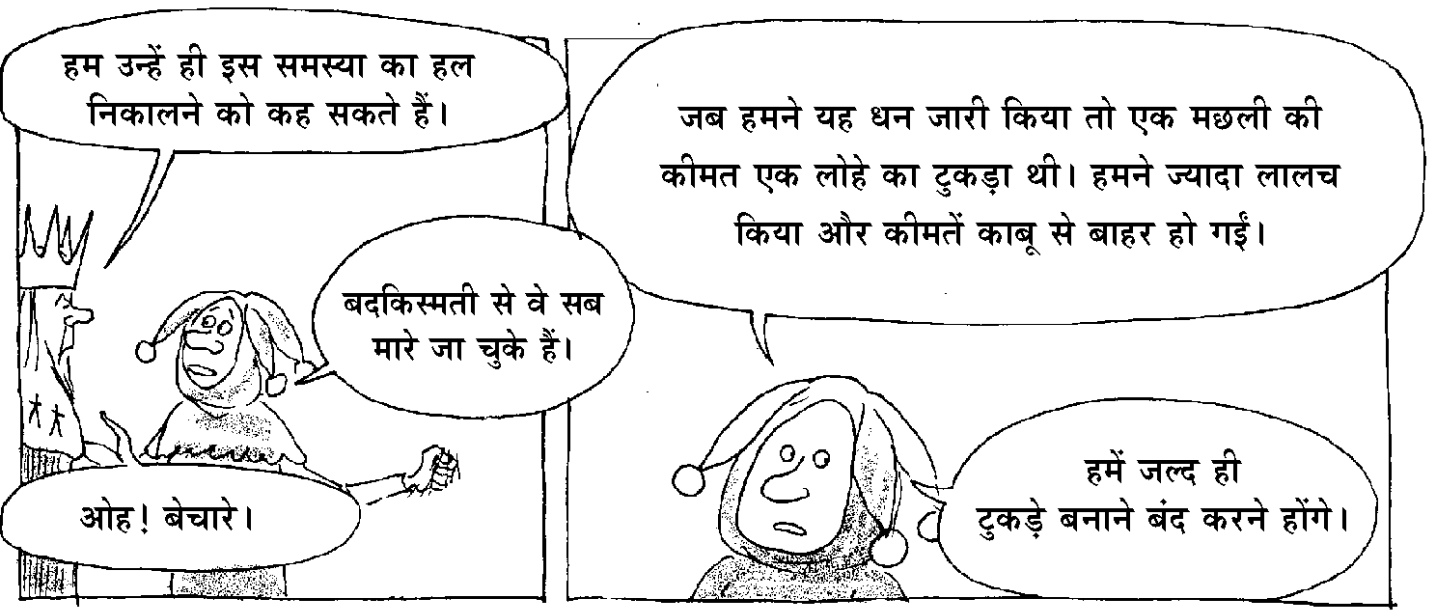

पर उधर क्रोमिरों के लिए भी राजा न्यूमिस के आर्डर ने नई मुसीबत खड़ी कर दी थी।

क्या आपने देखा महाराज! मछली की कीमत इतनी तेजी से बढ़ रही है लगता है इसकी कमी हो रहा है। कमी से कीमत बढ़ती है।

हमने मुद्रा नहीं चुनी। लोहा तो आम धातु है जिससे लोग वस्तुएं बनाते हैं। धातु विज्ञान तेजी से पनप रहा है। हमें किसी ऐसी धातु की मुद्रा बनानी होगी जो दुर्लभ हो।

क्या तुम सलाह देते हो?

सोना।

बिल्कुल ठीक। सोना पैदा करना मुश्किल है इसलिए इसकी मात्रा काबू में रहेगी।

यह खराब भी नहीं होता।

मुझे एक ही बात परेशान कर रही है। इस सोने का हम कोई इस्तेमाल नहीं कर पाएंगे क्योंकि यह एक नरम धातु है।

इससे कुछ बनाना जरूरी नहीं है।

मैं नहीं जानता... लोहा पिघला सकते हैं। इनसे कई काम की वस्तुएं बन सकती हैं जैसे बानों के नुकीले सिरे, कीलें...

और इस्तेमाल होने वाली कई चीजें।

वैसे... मैंने सोने के इस्तेमाल का तरीका भी खोज लिया है।

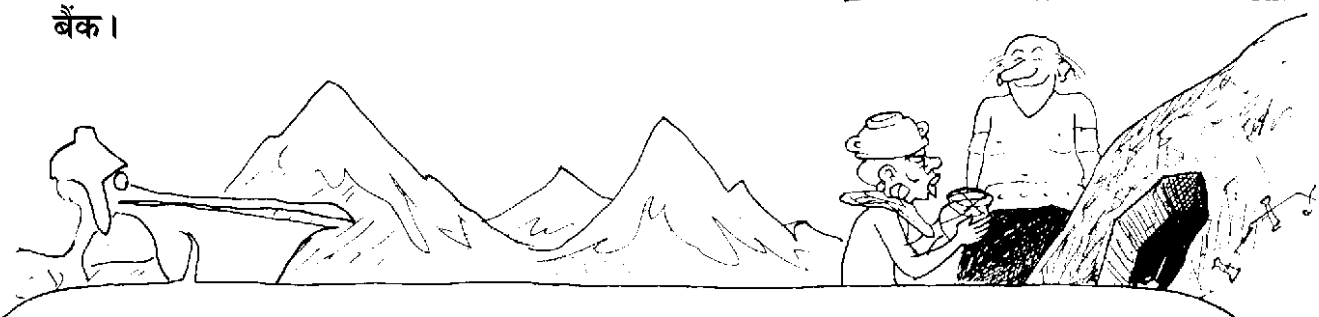

क्या ?
इससे मुद्रा बनाओ।
इस तरह देश में मुद्रा संबंधी स्थिरता आ गई। लोग धन को बचत के रूप में भी रखने लगे।
इस तरह वाणिज्य का विकास हुआ। बोरडेरिया के जिब्रू ने तायाकों को अपने बर्तन खरीदने के लिए राजी कर लिया जिससे उन्हें एक नया बाजार मिला।
तायाकों के राजा को भोग-विलास का मजा मिला। उसने शिकार किए गए मांस के बदले बहुत-सी अच्छी चीजें बटोर लीं।
बैंक।
अपनी मुद्रा की बचत व चोरी-चकारी से सुरक्षा के लिए उन्होंने उसे एक ऐसे व्यक्ति के पास रखना शुरू किया जो थोड़ी सी फीस के बदले उनका धन सुरक्षित रखता था।

ध्यान से सुनिए! आप में से जो लोग नंगे सिर घूमते हैं उन्हें बुरी आत्माओं, नकारात्मक किरणों व सूर्य की किरणों से बचाव के लिए बोरडेरिया का बना टोप पहनना चाहिए।

यहां सिर के टोप बिकते हैं।

स्कूल में जाकर अपना समय न गंवाए। हमारा यह टोप आपको बिना पढ़ाई-लिखाई के विद्वान बना सकता है।

आर्चीबाल्ड को देखिए। इस अनपढ़ ने भी इसी टोप की मदद से ऊंगलियों में छिपा राज जान लिया।

हूं। जिब्रू जानता है कि विज्ञापन किसे कहते हैं।

प्यारे आर्चीबाल्ड! हमारा धंधा तो जोरों पर है।

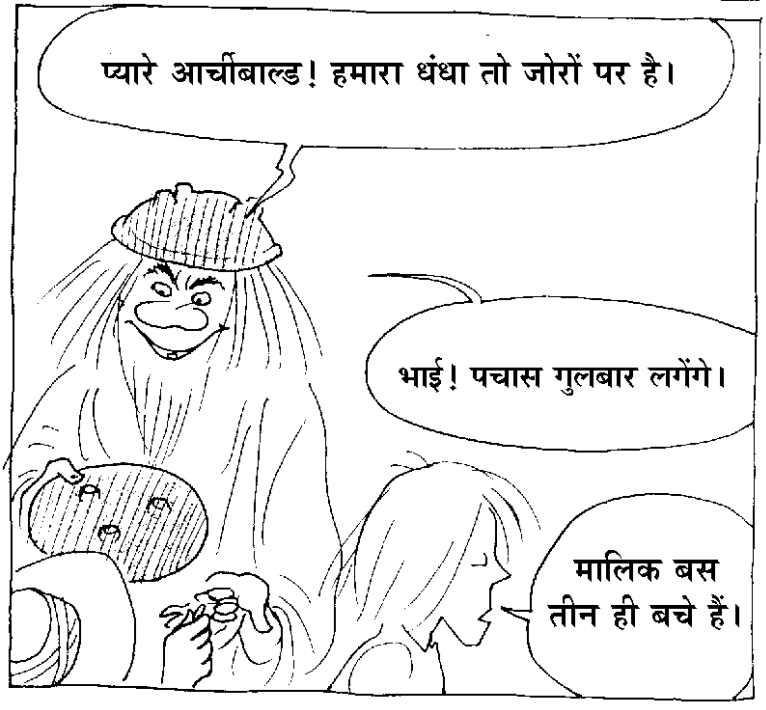

हूं, अच्छा साठ गुलबार दे दो।

पर आपने तो दाम बढ़ा दिए।

यह सब तो भगवान की मर्जी है।
लोगों की मांग ने ही कीमत बढ़ाई है।

हमने बर्तन बनाने के लिए लकड़ी पाने के चक्कर में जंगलों का सफाया कर दिया।

आर्चीबाल्ड! मैंने इस बारे में सब पता कर लिया है।
हम अपने बर्तन इस अलकतरे के तेल से पकाएंगे।

छि:! कैसी बदबू है।

चुपचाप काम करो
कोई चिंता मत करो।

मुद्रा स्फीति के कारण कीमतें।

कुछ ही समय बाद...

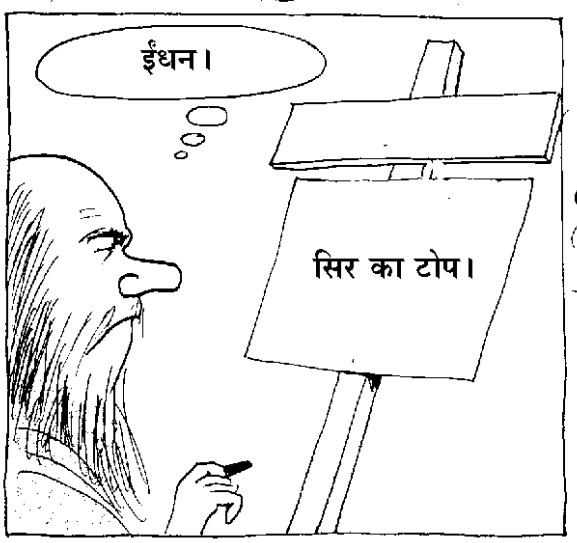

एक दिन...

मुझे सब पता है। झील पर काम करने वाली लड़की ने तुम्हारा दिमाग खराब कर दिया है।

शायद उन लोगों ने 'कोऑपरेटिव' जैसा भी कुछ खोल रखा है।

मुझे प्रतिदिन पांच गुलबार चाहिए।

और हर सप्ताह एक दिन की छुट्टी।

क्या तुम धंधा चौपट करना चाहते हो? अब मुझे अलकतरे के तेल की कीमत भी चुकानी पड़ती है जो दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है।

आप बस इतना करें कि वो दवा... जरा कम हो!

प्रतिदिन पांच गुलबार! क्यों मेरी जान के पीछे पड़े हो?

सुनो! अगर तुम कड़ी मेहनत करोगे तो मैं तुमसे अच्छी तरह पेश आऊंगा।

पांच गुलबार प्रतिदिन।

हे भगवान! ये सब क्या हो रहा है।

चुपचाप काम करो कोई चिंता मत करो।

पर इतने पैसों से तुम क्या करोगे?

जी नहीं पांच गुलबार अभी।

मैं अपने लिए कमीज और साबुन खरीदूंगा।

अच्छा, पहले मौज-मस्ती और फिर लंपटता शुरू होगी।
मेरा दिमाग मत घुमाओ। मैं अपने लिए एक कमीज लेना चाहता हूं।
मुझे भगवान के सामने तुम्हारी जवाबदेही कहनी होगी।
मुझे तुम्हें तुम्हीं से बचना होगा।
ठीक है! आज से अपने बर्तन खुद ही बनाओ।
वो कितना एहसान फरामोश निकला। मैं उसे बरसों से खिलाता आ रहा हूं...
अरे... मेरी दवा।
अगले दिन सुबह।
आर्चीबाल्ड! जल्दी नीचे आओ तुम्हें ग्राहकों के लिए कुछ टोप बनाने होंगे। वे लोग कल लेने आ रहे हैं।
मुझे हर रोज पांच गुलबार और सप्ताह में एक दिन की छुट्टी चाहिए।

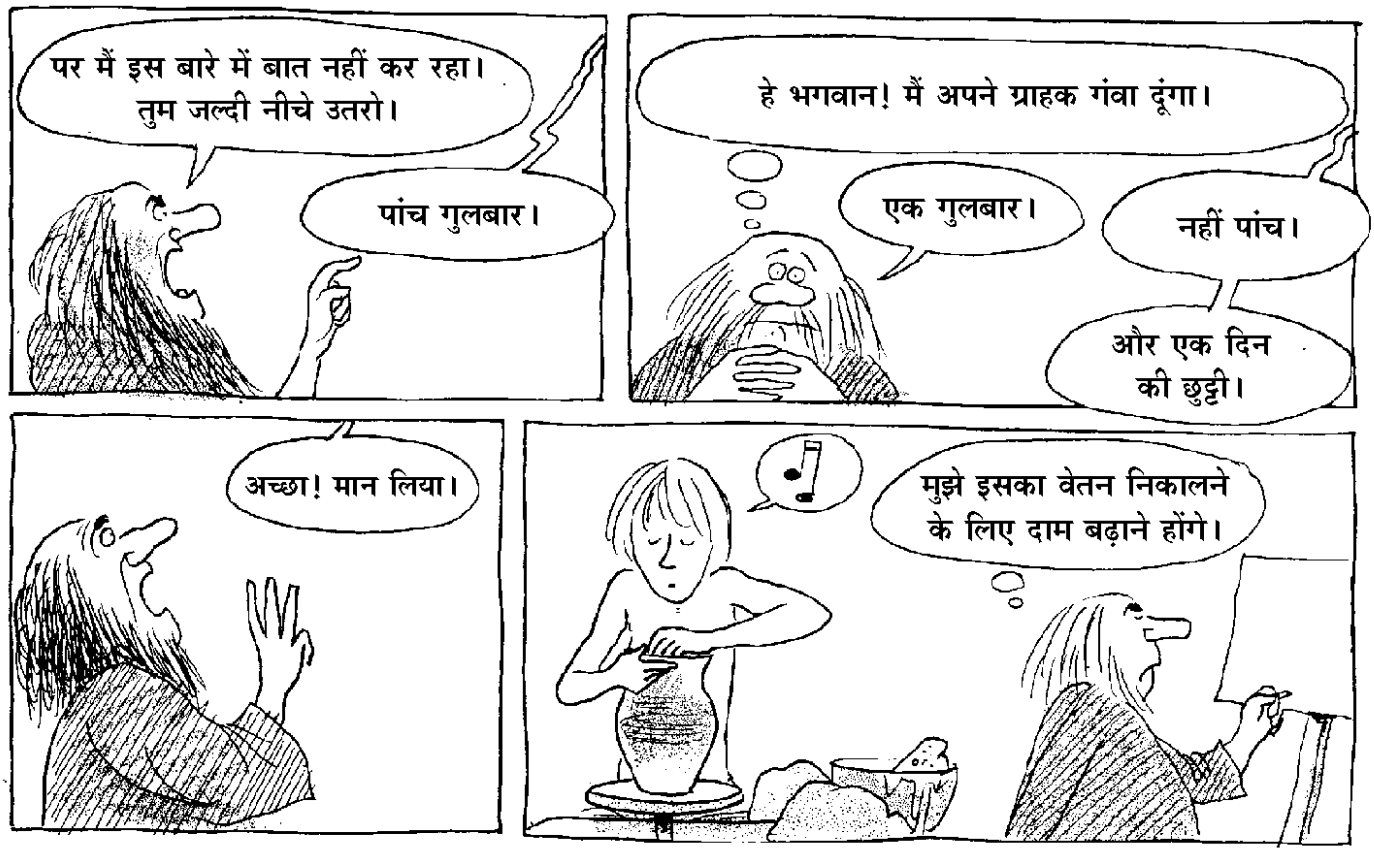
पर मैं इस बारे में बात नहीं कर रहा। तुम जल्दी नीचे उतरो।
पांच गुलबार।
हे भगवान! मैं अपने ग्राहक गंवा दूंगा।
एक गुलबार।
नहीं पांच।
और एक दिन की छुट्टी।
अच्छा! मान लिया।
मुझे इसका वेतन निकालने के लिए दाम बढ़ाने होंगे।

प्रतियोगिता।

आर्चीबाल्ड! इन लोगों को क्या हुआ?
मैं नहीं जानता।
हां जी! देखिए यह टोप, यह आपको हर चीज से बचाएगा।
क्या हम इसे पहनकर देख सकते हैं?
हां-हां, क्यों नहीं।

जरा देखें इसमें कितनी जान है।

हैं!!

फटाक!

बकवास।

बिल्कुल बेकार है

क्या यह बकवास है?
पर पीने के काम तो आएगा।

नहीं, वहां भी
काम नहीं आएगा।

इनमें पीने का मजा
ही अलग है।

क्या?

देखो! आर्चीबाल्ड! यह लोहे के टोप और पीपे...
तुम्हें नहीं लगता कि हम बरबाद हो गए।

इस तकनीकी खोज ने कुछ ही समय में बोरडेरिया के जिब्रु का व्यापार तबाह कर दिया।

रोजगार बाजार।

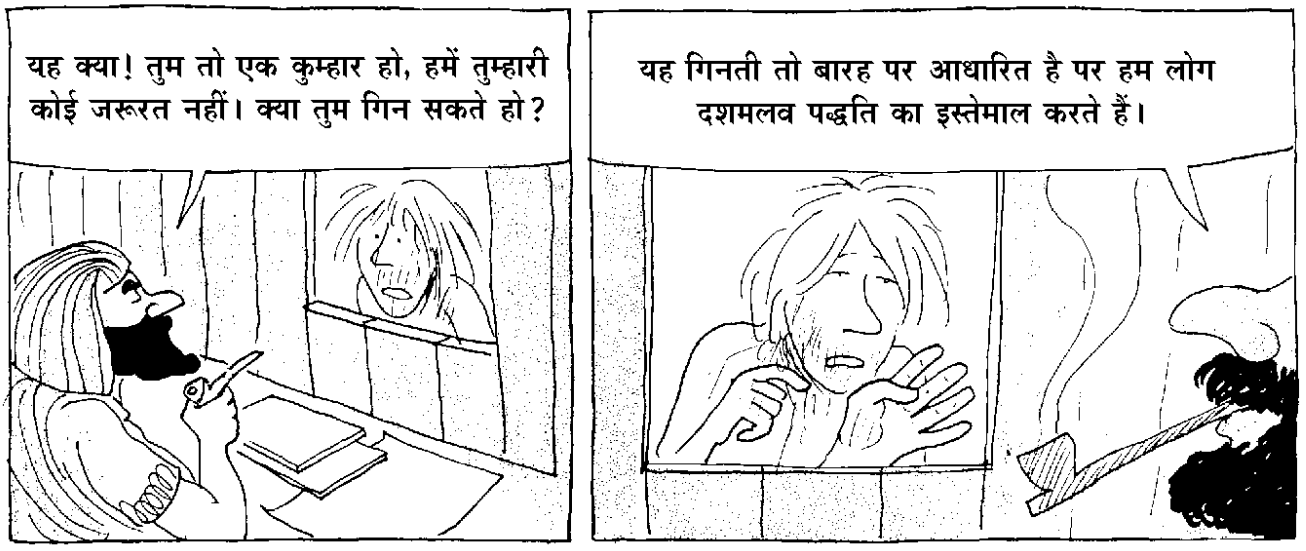

आर्चीबाल्ड बेरोजगारी के दौर से गुजर रहा था। उधर झील के किनारे पर सोफिया...

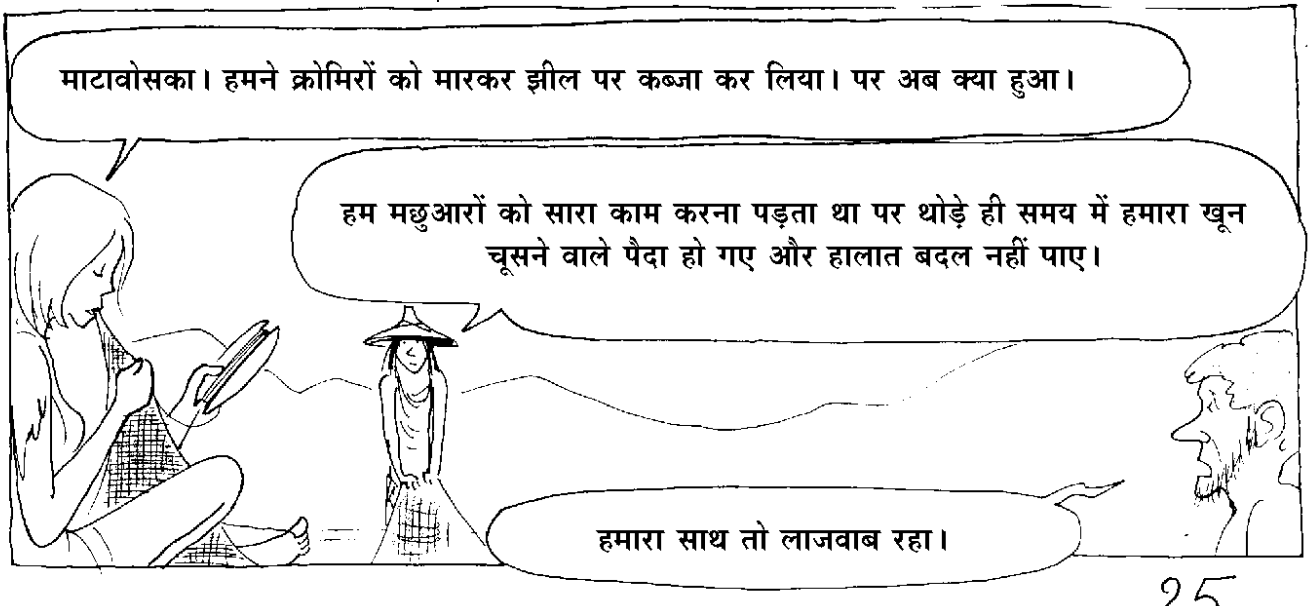

कामरेड! आपको ऐसा नहीं करना चाहिए। यहां आप पैदावार के लिए काम कर रहे हैं परंतु दूसरे लोग राजनीतिक चेतना जगाने में जुटे हैं। हम सब एक नियोजित अर्थनीति में जी रहे हैं।

हां, बिल्कुल ठीक! जरा आओ और राजनीतिक नेताओं पर एक नजर डालो।

वे लोग खा-पी कर मजे से सो रहे हैं।

वे लोग खा नहीं रहे हैं। भोजन की गुणवत्ता जांच रहे हैं। तुम्हें गलतफहमी है।

हां! वो तो मैं देख ही रही हूं।

सिर्फ एक आदमी काम पर है बाकी नौ सो रहे हैं या कुछ नहीं कर रहे।

हम सब अच्छी तरह मिलकर रह सकते हैं। यहां कोई बेरोजगार नहीं, सबके लिए काम है।

हां! इस तरह यहां कोई अमीर भी नहीं होगा।

सोफिया! जरा सावधान रहो। वह आदमी खतरनाक हो सकता है।

जहां पैदावार, वेतन, कीमत व खपत आदि सब कुछ राज्य के अधीन होता है।

यह सब अच्छी तरह जानती हूं। भगवान जानता है कि मैं भी क्रांति चाहती हूं। जब हमने क्रोमिरों की हत्या की तो मैंने एक भी आंसू नहीं बहाया पर तुम्हारे इन निठल्ले और आलसी लोगों की राजनीतिक सूझ-बूझ क्या रंग लाएगी? इन्हें हमेशा लाभ में क्यों रखा जाता है? क्या केवल सुविधाओं पर इनका ही हक है?

तुम्हें इन छोटी-छोटी बातों से ऊपर उठकर सोचना चाहिए।

पहाड़ियों के उस पार बोरडेरिया में आदमी, आदमी का खून चूस रहा है।

यहां यही सब थोड़ा अलग तरीके से हो रहा है।

बस बहुत हुआ! मैं तुम्हारी रिपोर्ट लिखने जा रहा हूं।

हे प्रजापालक!

इधर राजा न्यूमिस के दरबार में।

मैं नहीं चाहता कि हमारे साथ भी वही सब हो जो पूर्वी क्रोमिरों के साथ हुआ।

हमें कुछ नए कर लागू करने होंगे।
पतले लोगों पर या दाढ़ी वालों पर कर लगा दो।

ऐसा होना मुमकिन नहीं है। लोग बगावत पर उतर आएंगे। अगर हमने सोने के टुकड़ों को और पतला किया जो उनमें से आर-पार दिखने लगेगा।

सुनो! तुम मेरे अर्थशास्त्री हो। तुम्हें मेरे लिए कोई ऐसा तरीका खोजना होगा जिससे वे जान भी न पाएं कि उनसे क्या ले लिया गया। जल्द ही कोई उपाय करो वरना जान से हाथ धो बैठोगे।

कोई ऐसा तरीका... जिसे आसानी से कहा जा सके।
अरे! एक आदमी को सजा के लिए ले जा रहे हैं। इसने जरूर कोई अपराध किया होगा।
सैनिक! इसका अपराध क्या था?
पर्याप्त धनराशि न होने पर भी चैक लिखा था।
कुछ लोगों ने अपना सोना गुफाओं में सुरक्षित रख दिया और यह चलन से खत्म हो रहा है।
हां, यह बिल्कुल ठीक है।
लोगों ने तरीका खोजा है। वे एक कागज पर लिख देते हैं अमुक आदमी को इतने गुलबार दिए जाएं इन्हें चैक कहते हैं। आप उनसे वस्तुओं का भुगतान कर सकते हैं। अगर आपने अपर्याप्त धनराशि होने के बावजूद चैक लिखा जो उसे गैर-कानूनी माना जाता है।
यदि वे चाहें तो लोग उन्हें पर्वतों में ले जाकर उसके बदले में सोने की मुद्राएं दे देते हैं।
धन्यवाद सैनिक! तुमने मुझे बहुत अच्छी तरह सारे हालात समझा दिए।

हे भगवान! मुझे जल्दी ही कुछ न सूझा तो मेरा भी यही हाल होगा।
...हूं...।
...लेकिन।
मुझे उपाय मिल गया।

कागजी मुद्रा।

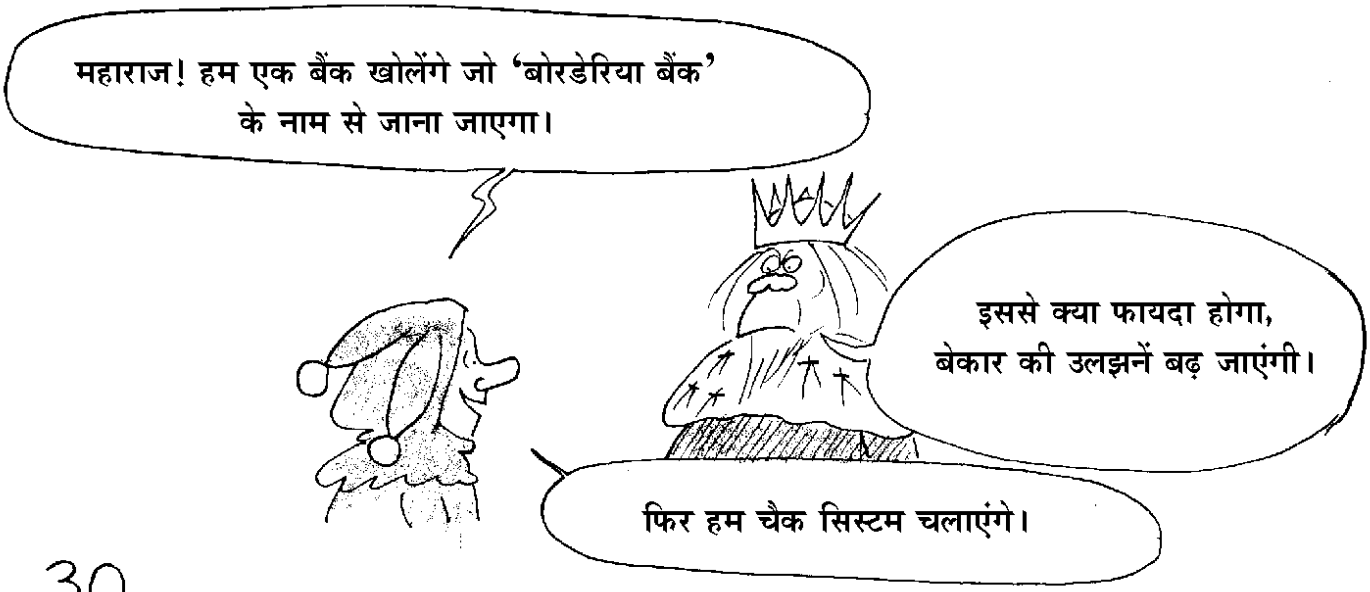
महाराज! हम एक बैंक खोलेंगे जो 'बोरडेरिया बैंक' के नाम से जाना जाएगा।
इससे क्या फायदा होगा, बेकार की उलझनें बढ़ जाएंगी।
फिर हम चैक सिस्टम चलाएंगे।

हम बैंक खोलकर प्रजा द्वारा एकत्र किया गया सारा धन वापिस दे सकते हैं। इसके बदले में हम उन्हें निश्चित धनराशि के वाऊचर देंगे। इस तरह सारा सोना हमारे पास आ जाएगा।

पर इससे हम अमीर नहीं बन पाएंगे।

शायद! अब मुझे तुम्हारी बात समझ में आ रही है।

हमारे सोने के पतले गुलबार तो दिखाई देते थे पर कौन जानता है कि हम कागजी मुद्रा भी चलाने वाले हैं।

हम कागजी गुलबार भी चलाएंगे जो सोने के गुलबारों से ज्यादा कीमती होंगे।

cela va être la plus belle affaire de chèques sans provision de l'histoire

बंदरों के लिए धन।

क्या गड़बड़ है।

क्या?

नहीं, कुछ नहीं महाराज!

सुनो, अगर हमने ज्यादा कागजी मुद्रा चलाई तो बेवकूफ लोगों को भी शक हो सकता है। अगर कागजी मुद्रा सोने के गुलबारों से ज्यादा हो गई तो भुगतान करना मुश्किल हो जाएगा।

मैं उन्हें बदलने से मना कर सकता हूं।

महाराज! इससे तो गड़बड़ हो सकती है। लोगों का कागजी मुद्रा से विश्वास उठ जाएगा।

अगर हम सोने के गुलबारों से दुगनी कागजी मुद्रा चलाएंगे तो हमें दो के बदले एक ही लौटाना होगा।

मुझे नहीं लगता कि ऐसा हो पाएगा।

मैं जानता हूं कि हमें क्या करना है। हमें लोगों से जो सोना मिलेगा उसे हम गला देंगे।

हां पर इससे हमें क्या मिलेगा?

सोना, ढ़ेर सा सोना।

हम किस समय में जी रहे हैं।
मैं हैरान हूं कि यह सब हमें कहां से ले जाएगा।
हर तरह की दवाइयां।
?
सोफिया
आर्चीबाल्ड
तुम यहां क्या कर रही हो?
क्या तुम देख नहीं सकते, मैं अपने-आप में कितना बदलाव ला चुकी हूं।
मैंने एक खास कोर्स किया है।
तुम इस बारे में कुछ उल्टा कहना चाहते हो?
तुम्हारा मतलब जादूगरी!
हां, कुछ ऐसा ही समझ लो।

विज्ञान में बहुत से राज छिपे हैं।
हूं...
मैं नींद आने की दवाएं, शक्ति बढ़ाने वाली दवाएं, दर्द निवारक दवाएं और सपने बेचती हूं।
क्या ये सचमुच काम आते हैं?
मैं कोई शिकायत नहीं कर रही पर अकाल के दौरान मैंने छः सौ हजार गुलबार कमाए।
बाप रे! इतनी बड़ी रकम।
तुम इन सब में विश्वास रखती हो?
SCIENCE POLITIQUE
KEYNES
LE CAPITAL
तुम जैसा भी जानते हो, उसी तरह जीना पड़ता है।

अमीर हो या गरीब! फर्क तभी तक है जब तक आपके पास धन है।

आह-आह-आह

इस बुरी दुनिया में केवल एक चीज ऐसी है जो पैसे से भी ज्यादा अहमियत रखती है।

क्या तुम अंदाजा नहीं लगा सकते?

...न...नहीं।

अरे-हां!!

और आखिर में।

आओ कहानी के इस भाग से पर्दा हटा दें।

अगले दिन सुबह।
ओह! मुझे बिल्कुल नींद नहीं आई।

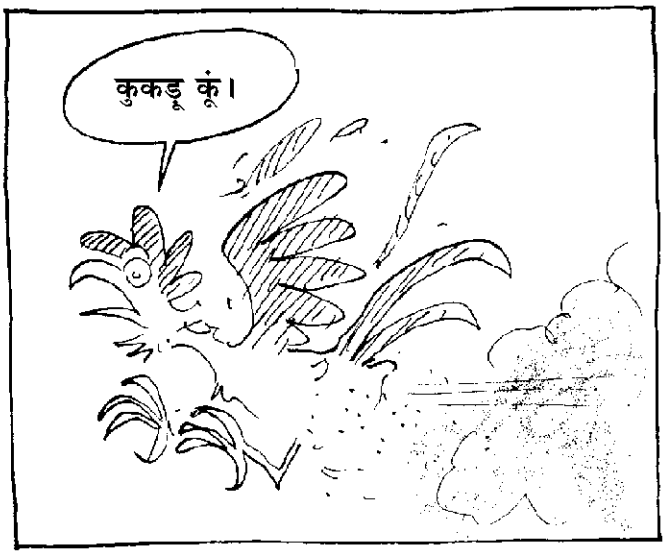
कुकड़ू कूं।

कुछ लोगों का दिल या टांगे कमजोर होती हैं, पर
पर मेरा नाड़ी संस्थान कमजोर है

अब मुझे देखने दो कि उसने वो दवा कहां रख दी

आर्चीबाल्ड! मेरे लिए एक तेज चाय।
वहां कौन से पौधे पड़े हैं?
वे भविष्य बताने वाली पत्तियां हैं।

अरे! चाय।
इनकी मदद से तुम भविष्य में जा सकते हो।
हां! तब सूअर भी उड़ सकते हैं।
यह पूरी तरह वैज्ञानिक है।
बेवकूफ।
यहां क्या हो रहा है।
अच्छा तो इसने क्या कहा है?
(*)

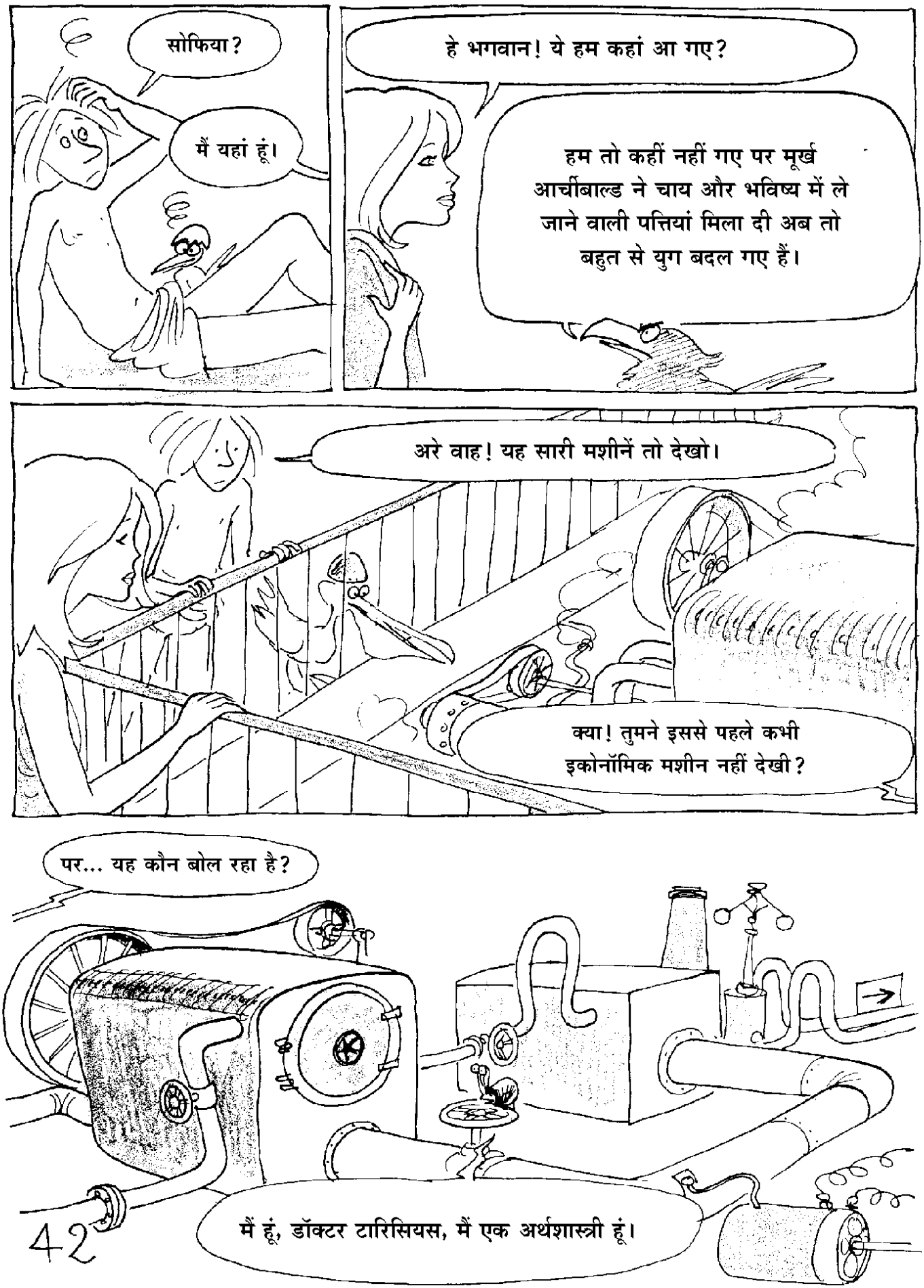
सोफिया?
मैं यहां हूं।
हे भगवान! ये हम कहां आ गए?
हम तो कहीं नहीं गए पर मूर्ख आर्चीबाल्ड ने चाय और भविष्य में ले जाने वाली पत्तियां मिला दी अब तो बहुत से युग बदल गए हैं।
अरे वाह! यह सारी मशीनें तो देखो।
क्या! तुमने इससे पहले कभी इकोनॉमिक मशीन नहीं देखी?
पर... यह कौन बोल रहा है?
मैं हूं, डॉक्टर टारिसियस, मैं एक अर्थशास्त्री हूं।

अच्छा! तो तुमने ही इस मशीन की खोज की?

जी नहीं, मेरे लिए इसके बारे में जानना ही काफी है।

ये सब पाइप किसलिए हैं?

ये सब इक्नोमिक सर्किट हैं।

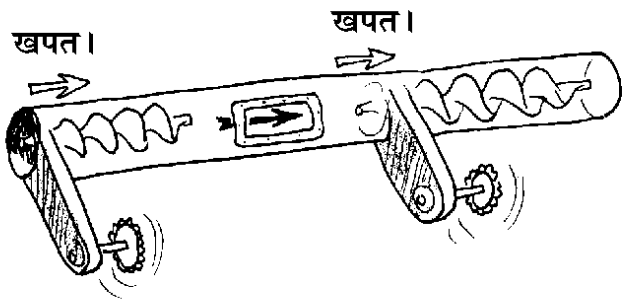

उत्पादन (पैदावार)

पाइप के बीच में अर्थशास्त्र द्रव्य 'लौली' दो आर्किमडीज पंपों के सहारे आगे बढ़ता है। आगे की ओर जाने वाला पंप खपत तथा पीछे की ओर जाने वाला पैदावार कहलाता है।

'लौली' दो ऐसे लाल पदार्थों का मिश्रण है जो आपस में नहीं मिलते। मिश्रण के बीच पाए जाने वाले बुलबुले इन्हें दबावयुक्त बना देते हैं।

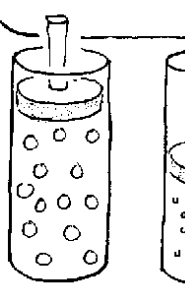

खपत और पैदावार पंप के बीच में।

एक खिड़की। आओ इससे अर्थशास्त्र के बारे में जानें।

काम ग्रीक भाषा का शब्द।

लौली डॉयनामिक का पहला नियम

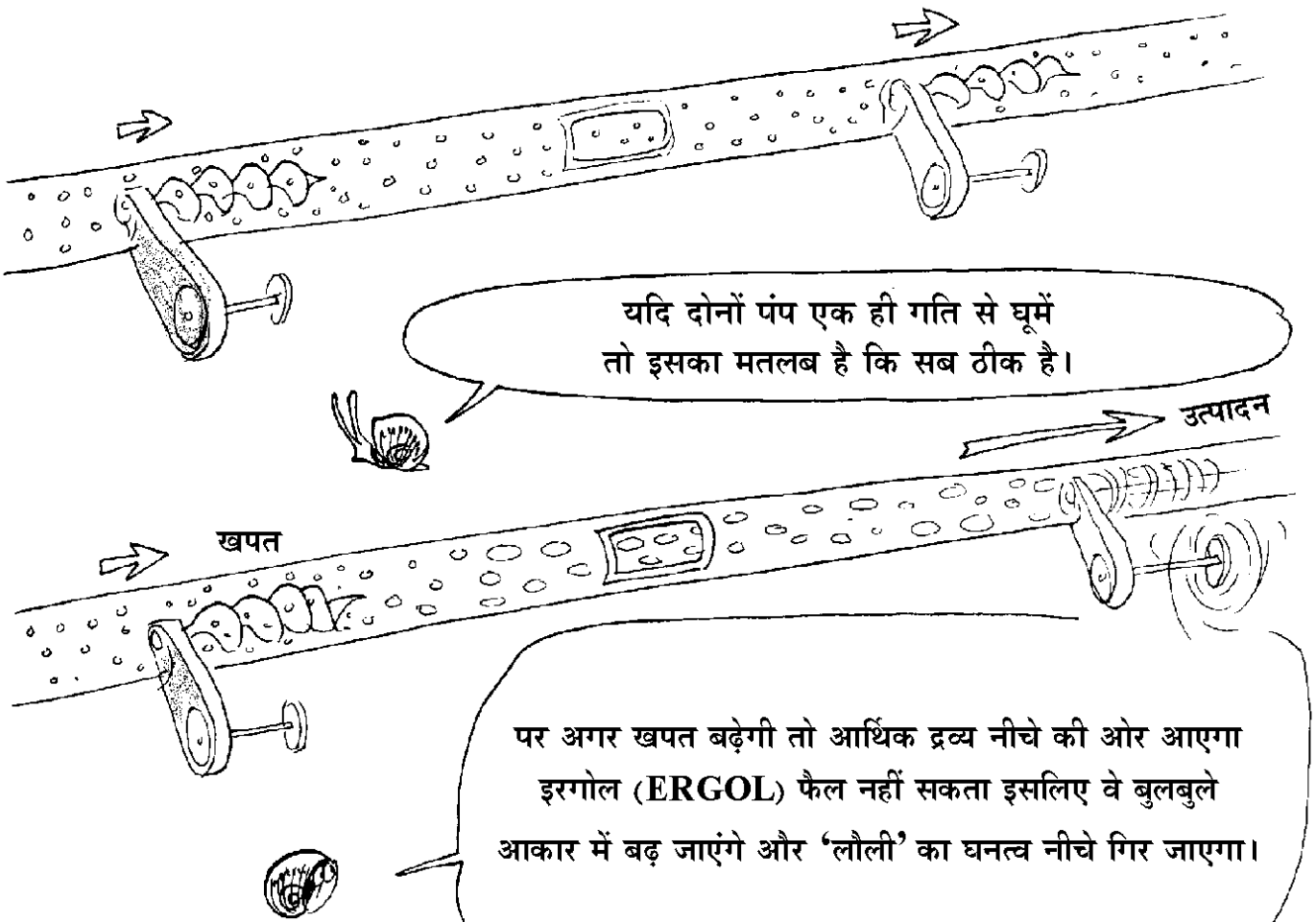

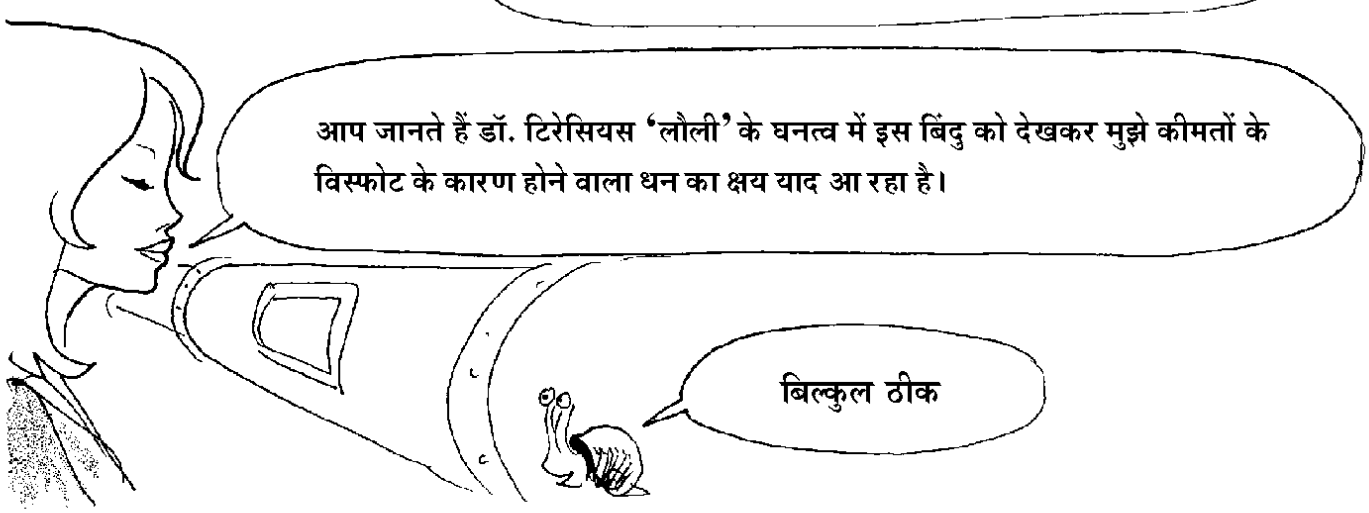

उत्पादन पंप की गति 'पूर्ति' और खपत पंप की गति 'मांग' से तय होती है

अगर वे संतुलित रहें या एक साथ घटे-बढ़े तो लौली का घनत्व एक सा रहता है और कीमतें स्थिर रहती हैं।

अगर खपत बढ़ती चली जाए और उत्पादन के स्तर में बदलाव न आए तो लौली का घनत्व घटता है और कीमतें बढ़ जाती हैं।

हां लेकिन

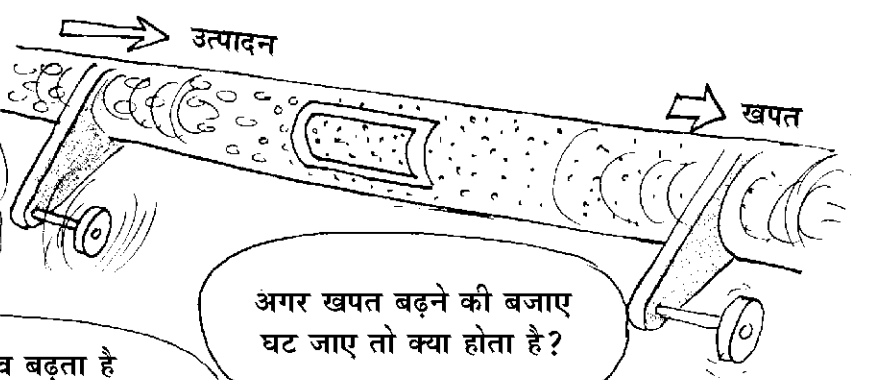

अगर खपत बढ़ने की बजाए घट जाए तो क्या होता है?

ऐसे हालात में लौली का घनत्व बढ़ता है और कीमतें गिर जाती हैं

अगर खपत बढ़े और उपज घट जाए तो कीमतें बढ़ती हैं उसी तरह जब उत्पादन ज्यादा हो तो कीमतों में गिरावट आ जाती है।

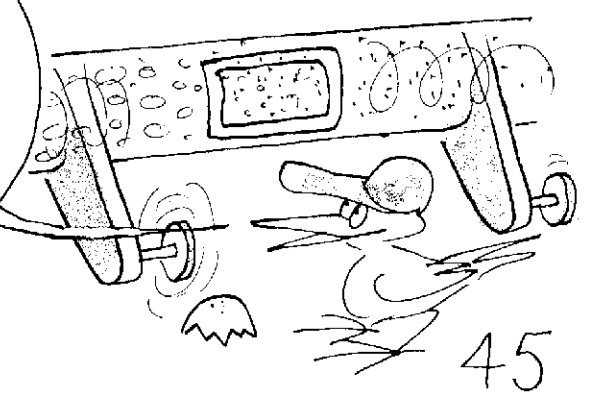

इसलिए खपत और पैदावार तथा मांग और पूर्ति के आपसी संबंधों के अनुसार कीमतें अपने-आप ही तय होती रहती हैं।

प्रति सैकेंड़ 'इरगोल' की कुछ मात्रा पैदावार पंप में जाती है। खपत पंप में भी ऐसा ही प्रवाह होता है।

खपत पंप के स्तर और 'इरगोल' के प्रवाह का संबंध कीमत सूची कहलाता है।

आओ! इस मशीन को थोड़ा पास से देखें।

यह तो एक मशीन लगती है।

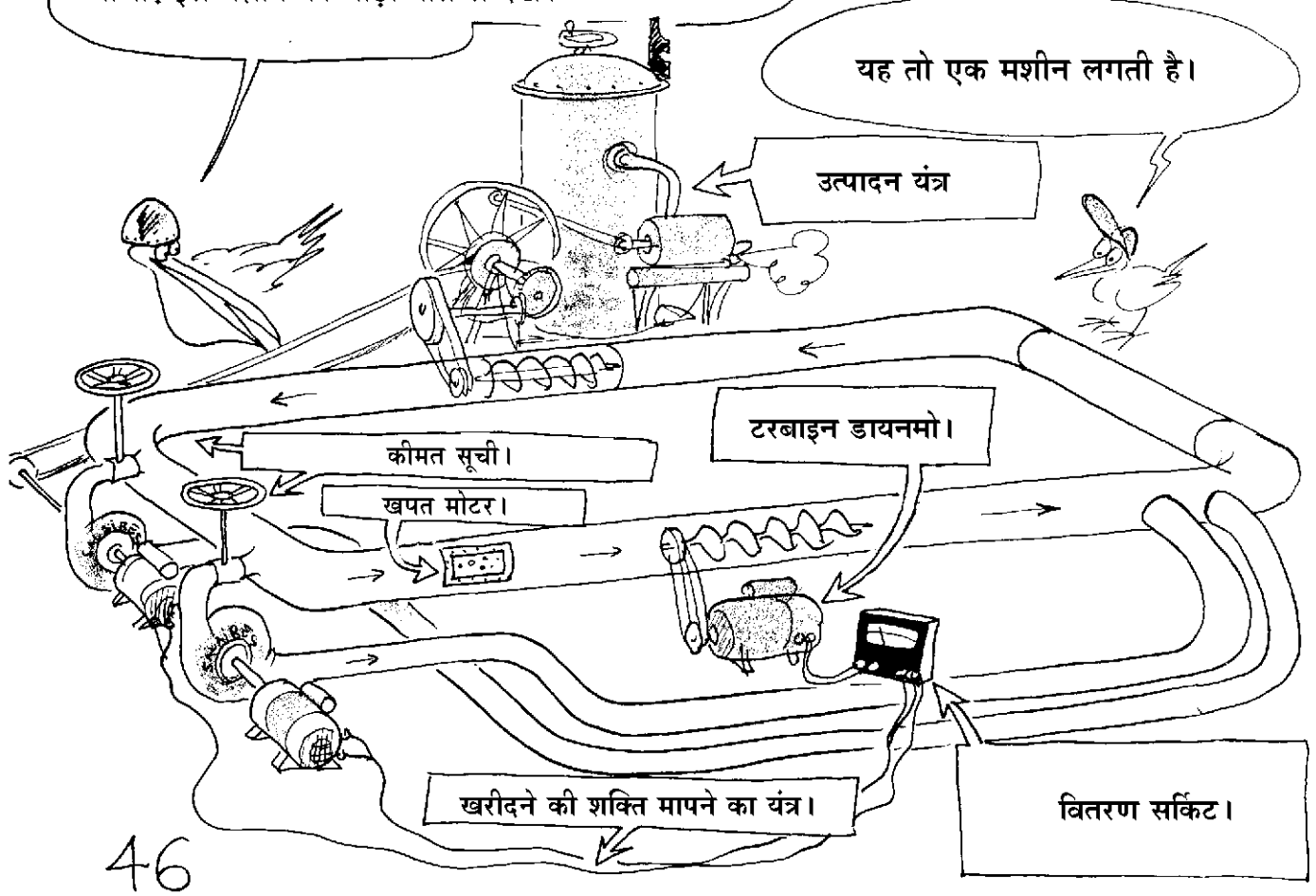

लौली डायनामिक का दूसरा नियम

उत्पादक यंत्र।
उत्पादक क्षेत्र।
सेवाएं।
लॉली का कुछ भाग मजदूरी वाली टरबाईन में डाला जाता है ताकि खपत वाली डायनमो काम कर सके।
इनमें से कुछ सीधे उत्पादक यंत्र से जुड़े हैं और वेतन पर चलने वाले उत्पादक क्षेत्र चलाते हैं।
लगता है लोगों को हर रोज इस पर अपनी नाक रगड़नी पड़ती होगी।
यह सब तो बहुत अच्छे तरीके से काम करता होगा फिर परेशानी क्या है।

यह उत्पादक यंत्र है।
यह सारी आर्थिक गतिविधियों का आधार है।
लेकिन इस आर्थिक क्रिया का माथा कैसे जाता है।
वैसे आर्थिक गतिविधि आधे 'इरगोल' (प्रवाहित गति) के बराबर होती है।
इस तरह इस बल की गिनती की जाती है।
आर्थिक दाब मापने की इकाई बार है।
शायद मैं इसे बैरोमीटर से माप सकती हूं।

एक गतिविधि बढ़ाने के लिए 'इरगोल' की राशि बढ़ा सकते हैं
पर इसके साथ ही उत्पादकता बढ़ाना भी जरूरी है।

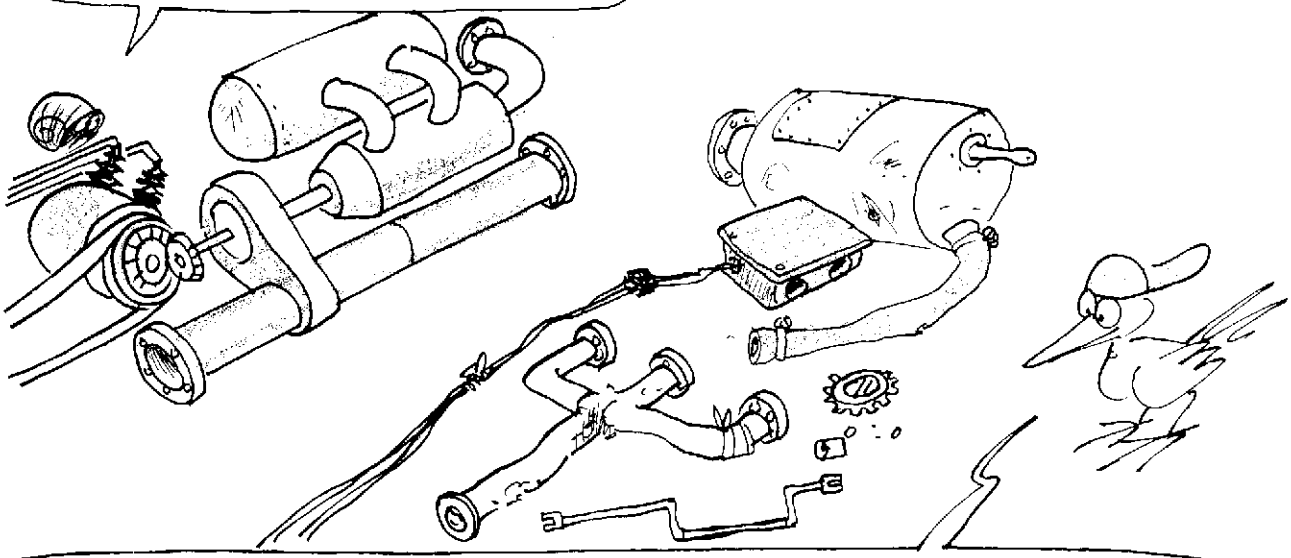

हां, बेहतर तो यही होगा कि पुरानी मशीन पर मेहनत करने की बजाए बड़ी आधुनिक व तकनीकी सुविधाओं से लैस मशीन इस्तेमाल की जाए।

एक बात मेरे लिए अब भी राज बनी हुई है।
इक्नॉमिक मशीन में डाली जाने वाली लौली
की मात्रा कौन तय करता है?

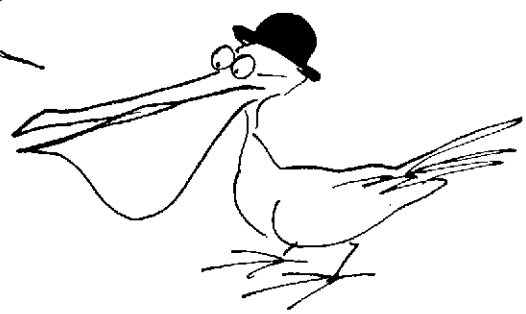

किसी भी आर्थिक गतिविधि की वास्तविक अवस्था इसमें बहने वाला 'इरगोल' की है। काम करने का बल और 'इरगोल' के प्रवाह की गति ही लौली का घनत्व है। यदि हम इस मशीन में एक नई उत्पादन यूनिट लगा दें तो क्या होगा?

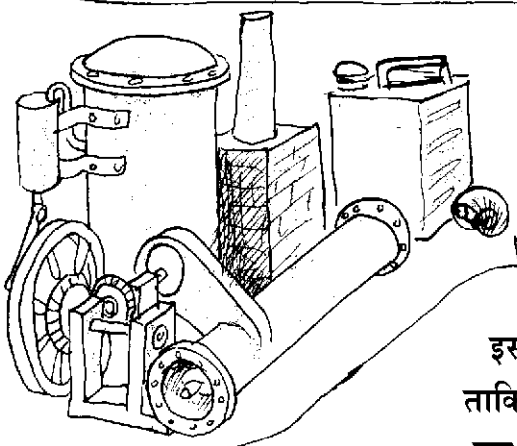

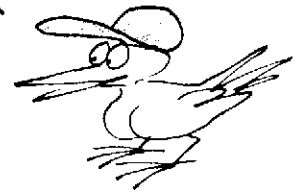

इस उत्पादक यंत्र के साथ इरगोल का पूरा टैंक जुड़ा रहता है ताकि कार्यबल बढ़ सके जिससे लौली का घनत्व बढ़े और कीमतें घट जाएं। कीमतों की स्थिरता बनाए रखने के लिए वे मुद्रा का थोड़ा भार बढ़ा देते होंगे।

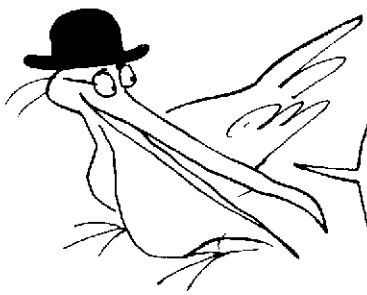

दरअसल वे हर बार चोरी-चोरी कुछ बुलबुले डाल देते होंगे जिससे यह मजदूरी को बढ़ने ही न दे।

यह मान लेते हैं कि हम विकास के दौर से गुजर रहे हैं। मैक्स! तुम एक उत्पादक क्षेत्र के कर्मचारी और अल्बर्ट! तुम गैर-उत्पादक क्षेत्र के कर्मचारी का अभिनय कर सकते हो।

गैर-उत्पादक क्षेत्र क्यों?

तुम सेवा व प्रशासन का प्रतिनिधित्व करो।

इक्नॉमिक मशीन में लगाया नया उत्पादक यंत्र अच्छी तरह काम कर रहा है।

यह यूनिट लगाने से रोजगार मिला और बेरोजगारी घटी लेकिन मजदूरी के दावे बढ़ने लगे।

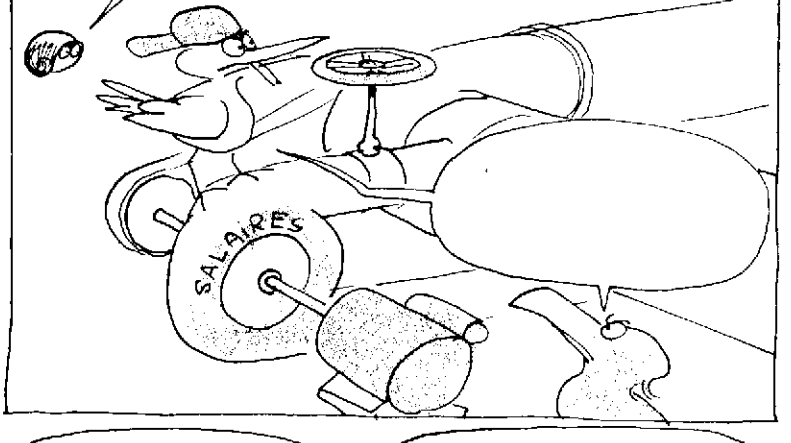

हमें बहाव में इसी समय तेजी चाहिए।

ठीक है! मैं धीरे-धीरे गति बढ़ाती हूं।

कीमतें अच्छी! इसे आराम से करते हैं।

गहनता बढ़ रही है। वितरण सर्किट में ज्यादा हानि नहीं हुई।

जैसे-जैसे उत्पादन पंप में इरगोल का बहाव बढ़ेगा, जीवन-स्तर भी ऊंचा उठेगा।

नहीं! तुम ठीक कहते हो। उत्पादन को और आधुनिक व तकनीकी बनाने के लिए लौली के भीतरी बल का भाग इस्तेमाल किया गया।

निवेश।

पर यह नई उत्पादन यूनिट अपने-आप नहीं बनी।

हाजिर हूं।

नवीन आधुनिकीकरण

नियमित रूप से प्रयत्न करने होंगे ताकि उत्पादन यंत्र पुराना न हो जाए।

पूँजी, लाभ कर व बचतें

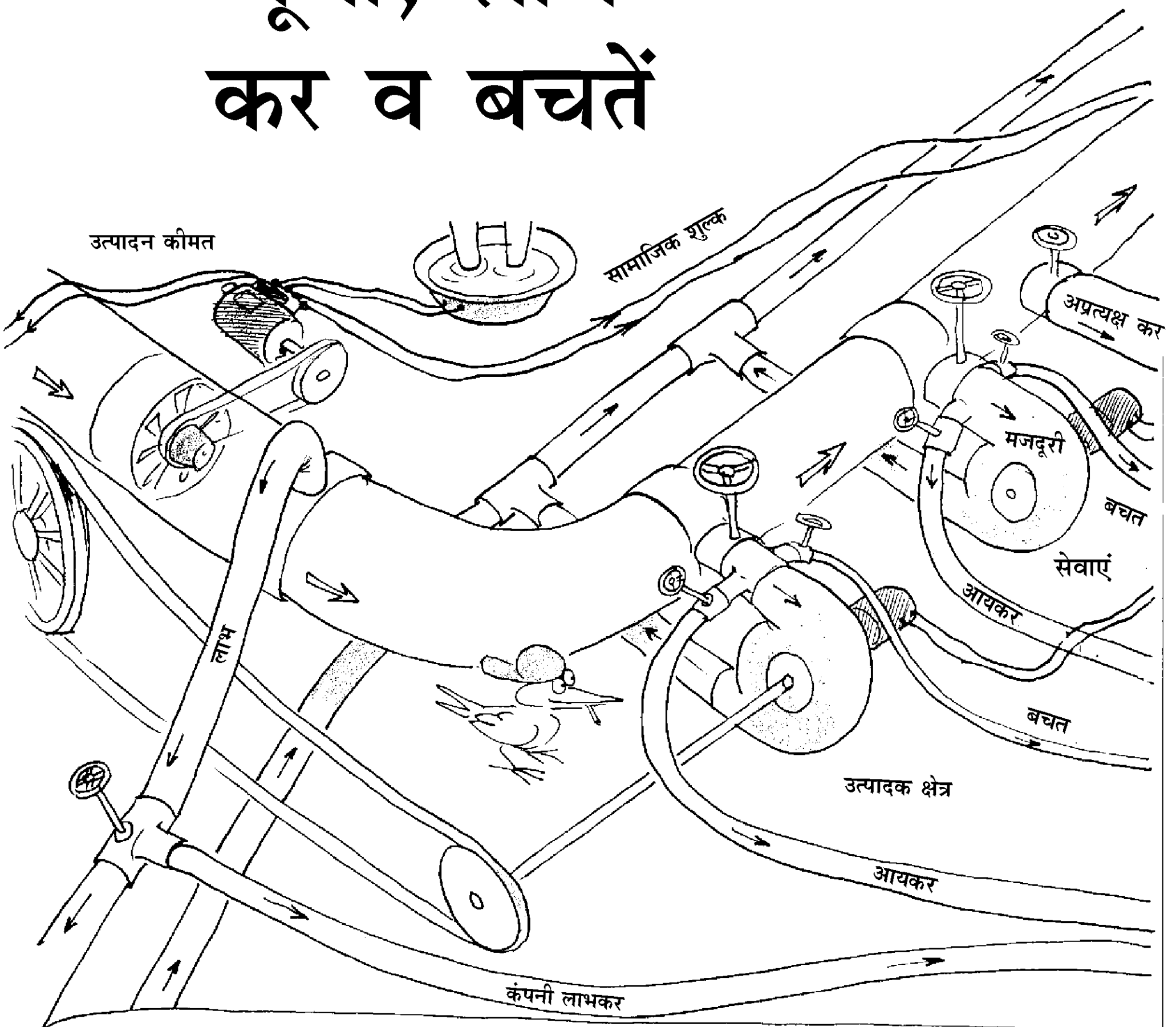

लौली, अनेक वस्तुओं के भार से दब गया। 'इरगोल' एक टरबाईन को चलाता है जो जेनरेटर से जुड़ी है, यह उत्पादक पंप के प्रवाह को धीमा कर देती है। इस तरह ऊर्जा का कुछ भाग 'सामाजिक शुल्क' के सर्किट में चला जाता है। दूसरा भाग उत्पादन कीमतों में और बाकी श्रीमान लौलीमेकर के पांवों का पानी गर्म रखने के काम आता है।

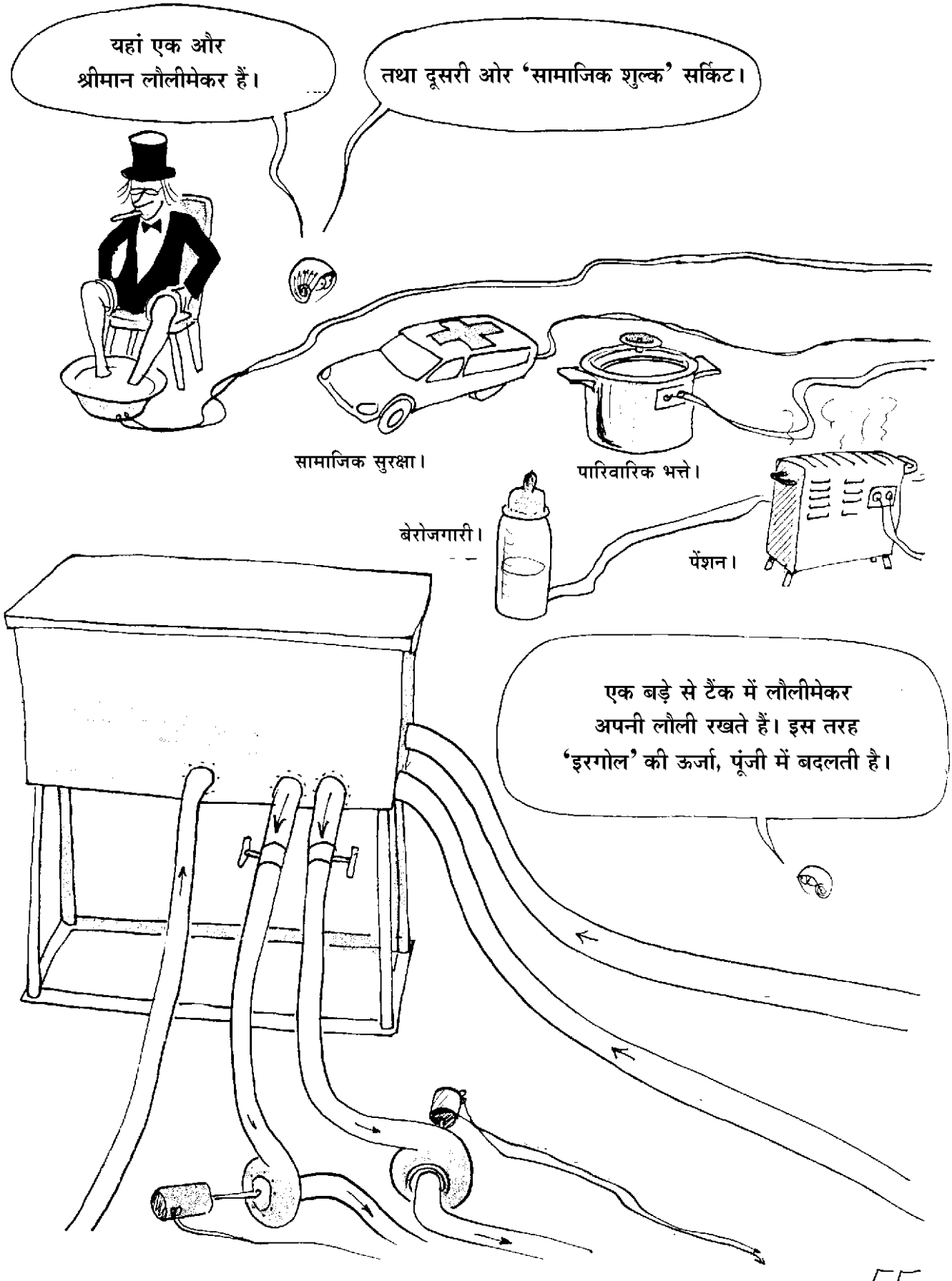
यहां एक और
श्रीमान लौलीमेकर हैं।
तथा दूसरी ओर 'सामाजिक शुल्क' सर्किट।
सामाजिक सुरक्षा।
पारिवारिक भत्ते।
बेरोजगारी।
पेंशन।
एक बड़े से टैंक में लौलीमेकर
अपनी लौली रखते हैं। इस तरह
'इरगोल' की ऊर्जा, पूंजी में बदलती है।

पूंजी टैंक कर के बाद होने वाले लाभों व बचत से भरता है।

टैंक में भरी हुई लौली दो टरबाइनों में जाती है। एक मेरी नई आधुनिकीकरण मशीनों में और दूसरी व्यावसायिक ऋण में।

दूसरी ओर वित्त के मिनिस्टर के पास भी ऐसा ही एक टैंक है जो करों से भरता है। इसमें लाभों पर कर, आयकर तथा अप्रत्यक्ष कर शामिल है।

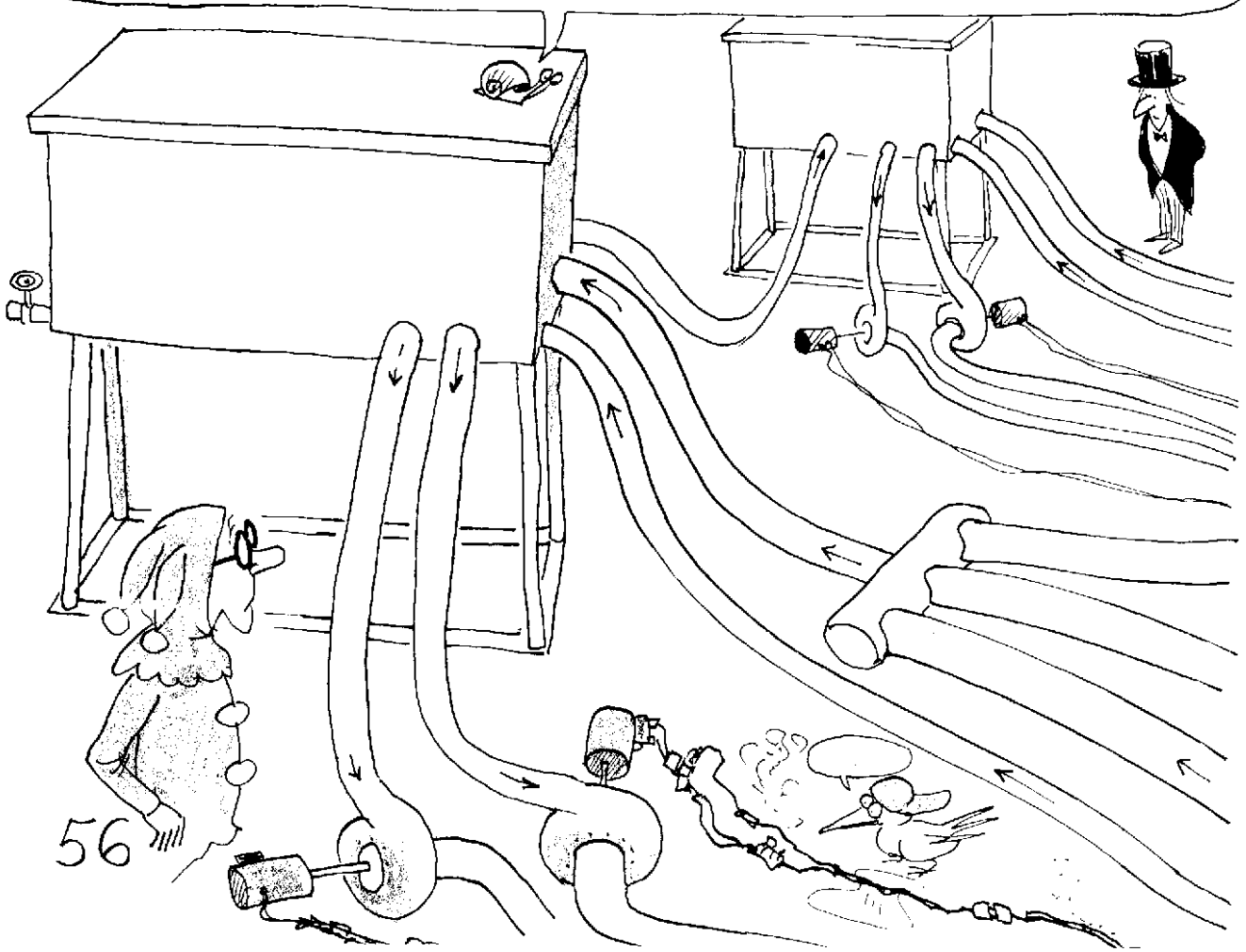

यहां कुछ सरकारी खर्च भी हैं।
सेना।
शिक्षा-सर्वेक्षण।
सामाजिक।
RF
शायद वह भी सरकारी है।
और बचत व उधार, कैसे काम करते हैं?
वैसे हमने देखा कि इक्नॉमिक मशीन अस्थिर थी। उत्पादन और खपत में कोई मेल नहीं बैठता था और प्रजा को कीमतों की तेजी झेलनी पड़ती थी।
इसलिए मजदूरों को अपनी लौली उनके टैंकों में डालने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

पता नहीं तुम लोग आर्थिक विकास के इस दौर में आगे क्यों नहीं आ रहे हो? मैं तुम्हें एक खास मौका देना चाहता हूं। मेरी और तुम्हारी लौली मिलने से पूंजी अपने-आप ही बढ़ जाएगी।

पूंजी।

यह जमाराशि हमें निवेश करने और इक्नॉमिक मशीन को आधुनिक बनाने में सहायता करेगी।

यहां कोई खतरा नहीं है। मैं आपको वार्षिक आय की गारंटी देता हूं। अपनी लौली का पूरा लाभ उठाएं।

अपनी लौली को सुरक्षित स्थान पर रखें। अपने भविष्य की सोचें। अगर आपने लंबे समय के लिए हमारे पास धन जमा करवाया तो मैं वार्षिक आय के साथ-साथ कर मुक्ति की भी गारंटी देता हूं।

निजी बैंक, स्टॉक व शेयर।

हूं।

थोड़ी देर बाद।

वैसे उसने हमें कुछ नहीं दिया पर थोड़ा फायदा तो हुआ ही।

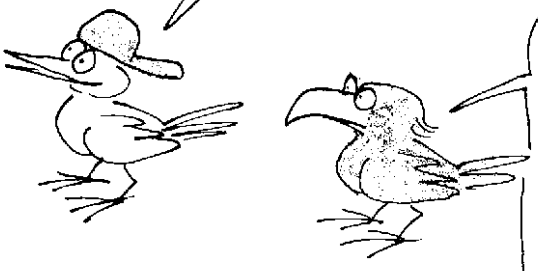

तुम बहुत सीधे हो। आर्थिक गतिविधियां बढ़ी हैं। नई उत्पादन यूनिट बनी है पर उन्होंने मिश्रण में इतने बुलबुले मिला दिए कि लौली के घनत्व को घटने से रोका नहीं जा सकता और आखिर में नुकसान तुम्हें ही पहुंचता है।

क्या तुम सोचते हो कि जब हमारी बचत से 'इरगोल' की मात्रा बढ़ती है तो मिश्रण का घनत्व बढ़ने की बजाय घट जाता है।

तुम क्या सोचते हो?

बहाव दुगना होने से हमारी मजदूरी भी बढ़ी है।

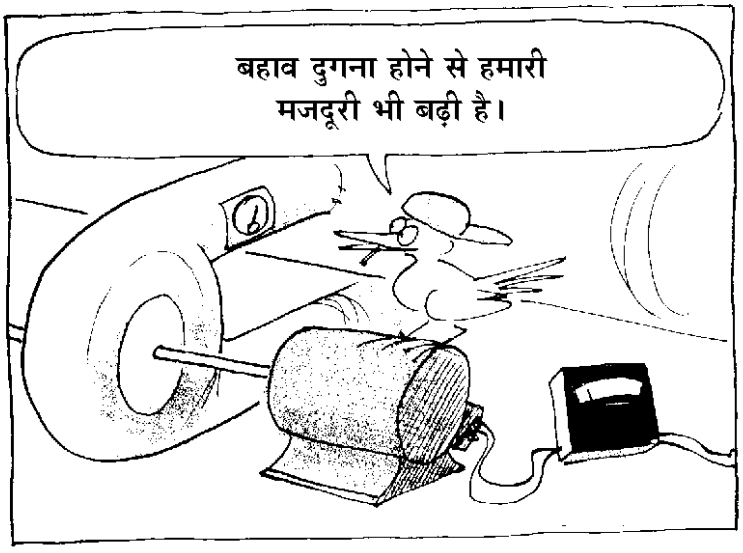

इन टरबाईनों में बस हवा है। लौली का घनत्व घट रहा है और जरा क्रय शक्ति को तो देखो।

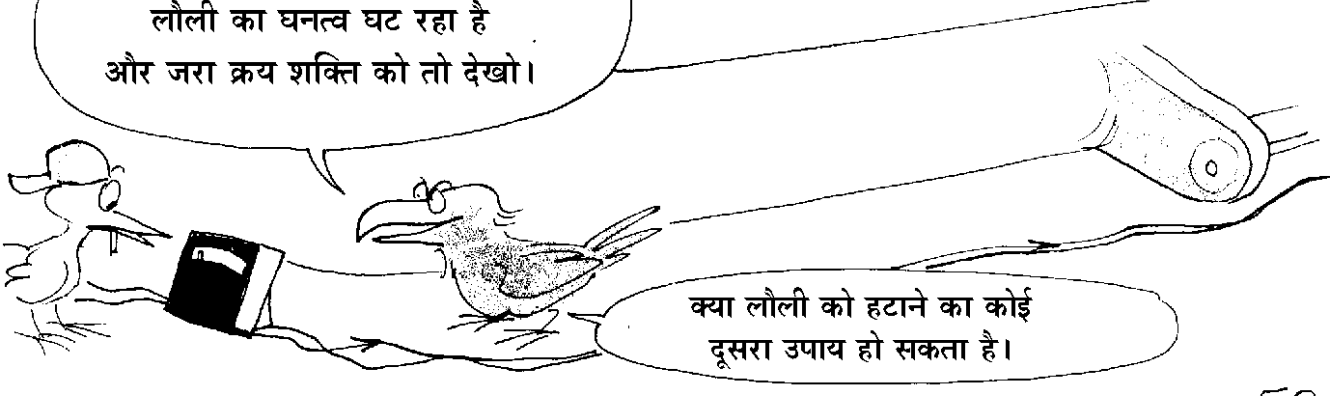

क्या लौली को हटाने का कोई दूसरा उपाय हो सकता है।

विकास लौली में नहीं बल्कि इसके 'इरगोल' में छिपा है। ऐसा ही जीवन-स्तर के साथ भी है, यहां भी मजदूरी नहीं क्रय शक्ति काम आती है।

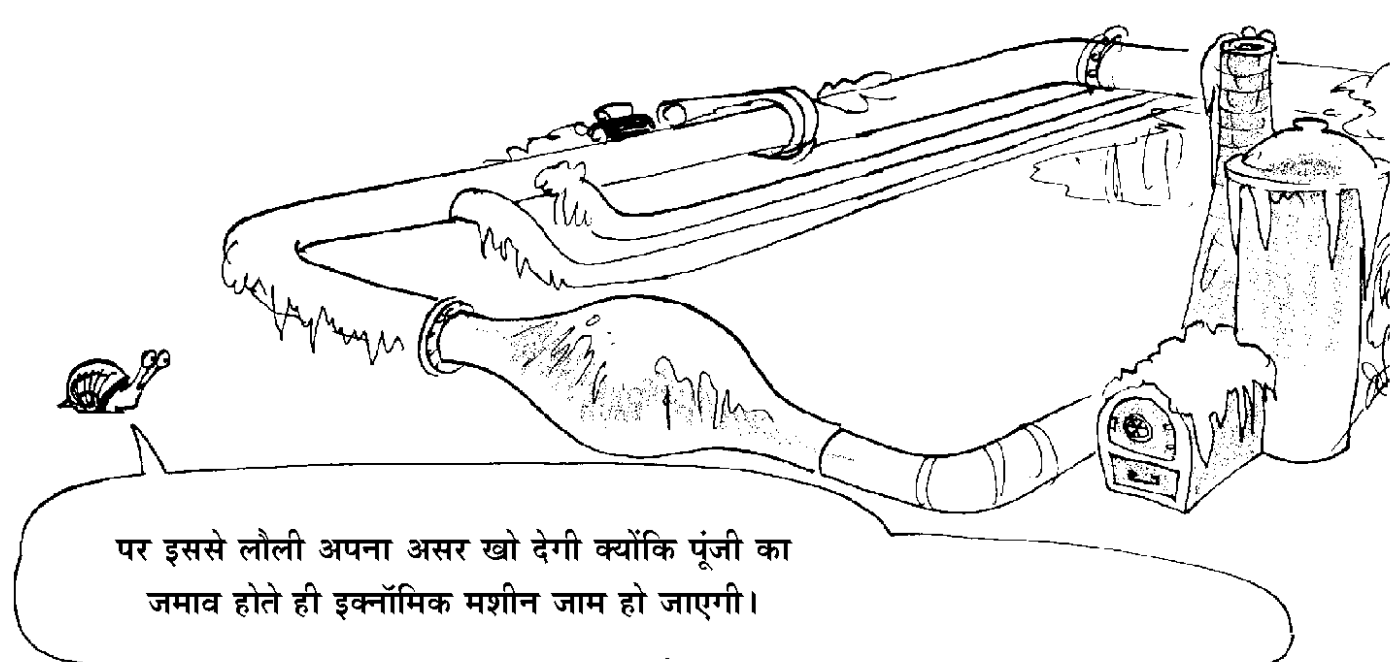

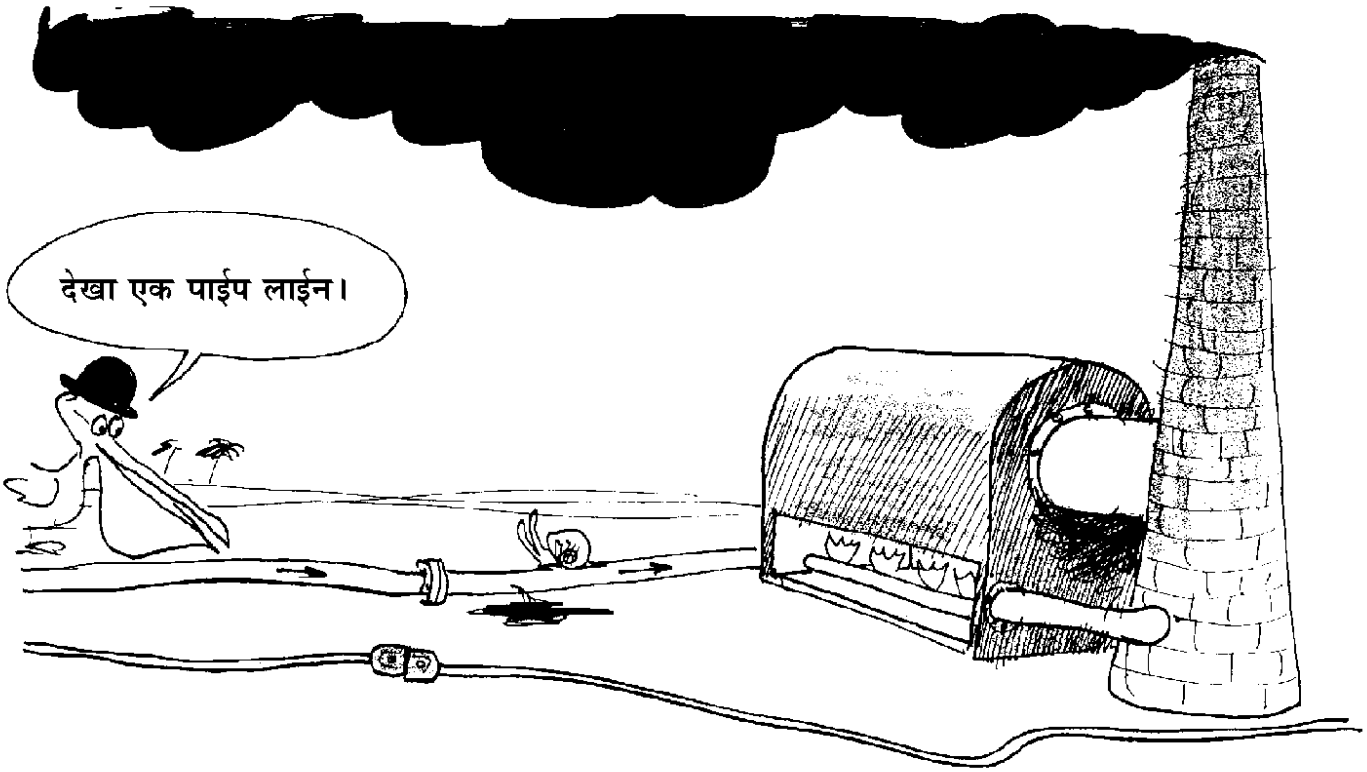

इक्नोमिक मशीन का बॉयलर रेगिस्तान से आने वाले कीमती तरल पदार्थ से चलता है।
इसे यहां तक लाने के लिए बहुत ऊर्जा की जरूरत पड़ती है।

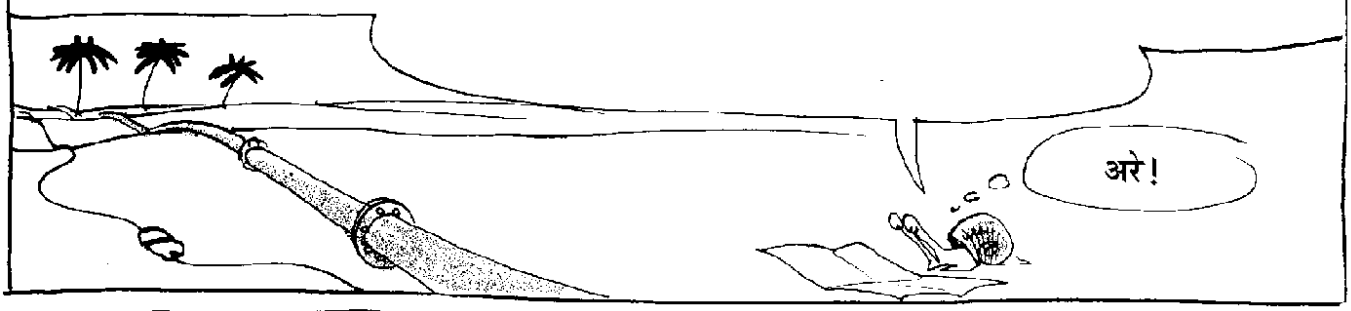

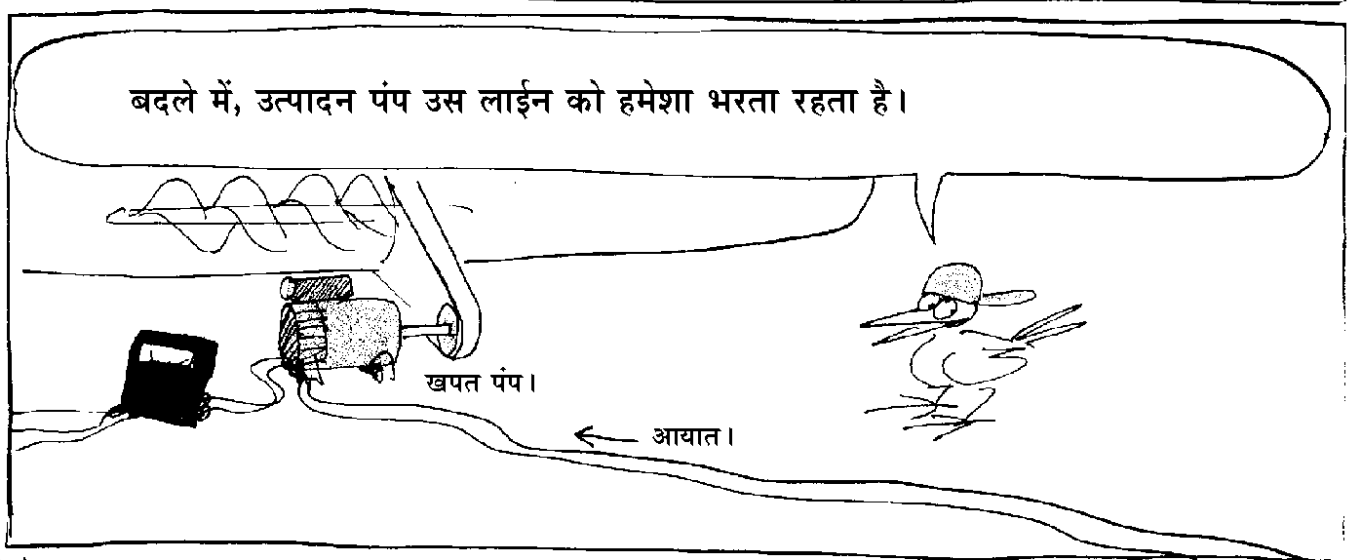

(*)

पैट्रोल की कमी।

अरे, ये तो मिनिस्टर हैं!
जरा डाक देख ली जाए।
हे भगवान!
हे भगवान! हे भगवान!
उन्होंने दाम बढ़ा दिए।
मेरे पैरों का पानी ठंडा हो रहा है।
यह तो आम बात है। यह धारा उत्पादन कीमत लाईन में जा रही है।
उत्पादक कीमतें।

देखो सारा प्रेशर गिर रहा है।
ये सब क्या हो रहा है?
लौलीमीटर ने गैर-उत्पादक लाभों वाली लाइनें बंद कर दी हैं।

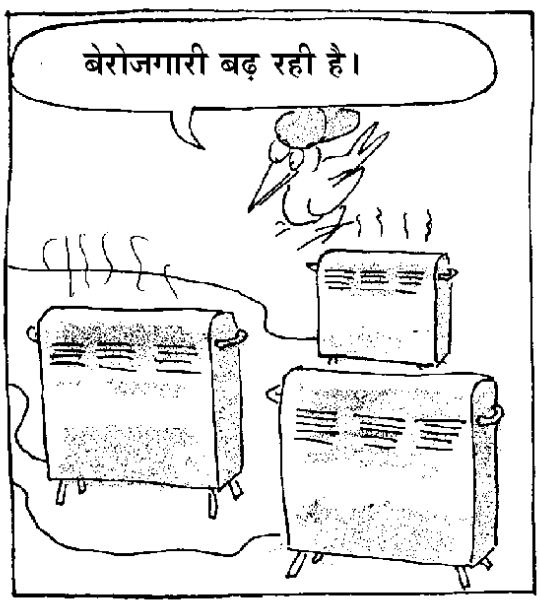
बेरोजगारी बढ़ रही है।

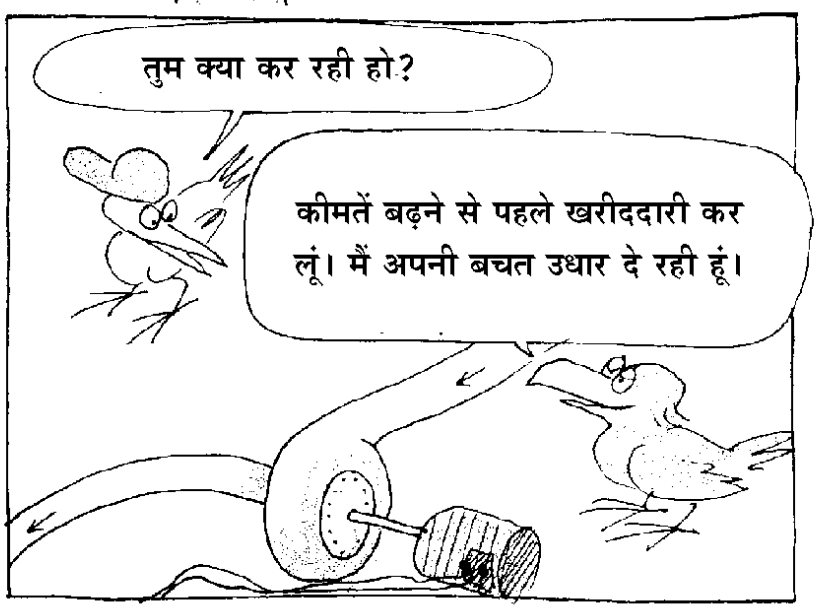
तुम क्या कर रही हो?
कीमतें बढ़ने से पहले खरीददारी कर लूं। मैं अपनी बचत उधार दे रही हूं।

और लौलीमेकर क्या कर रहे हैं?
इसका मतलब कि लौलीमेकर जाली मुद्रा बना रहा है।

वह हमारे पीछे से टैंक में थोड़ी हवा भरने की कोशिश कर रहे हैं।
नहीं, लेकिन बैंकिंग सिस्टम, सारे कागज वगैरह बेकार हैं। अगर हम किसी दिन लौलीमेकर का टैंक खाली करें तो हमें बड़ी हैरानी का सामना करना होगा।

और विश्वास की कमी ने कीमतों को आसमान पर पहुंचा दिया है।

हमें क्रेडिट का ऐसा इस्तेमाल रोकना होगा।

लौलीमेकर लोगों को बहुत लौली उधार देता है जबकि उसे मैंने धन उधार दिया।

इस तरह हर व्यक्ति ने दूसरे को उधार दिया?

मुझे तो इस कर्जे का चक्कर ही बुरा लग रहा है।

मैं इस उधार के चक्कर में फंसा हूं और उधर सरकारी खजाने तेजी से खाली हो रहे हैं।

हम क्या कर सकते हैं। हम प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष और लाभों पर होने वाले टैक्स बढ़ा दें?

मैं उसका क्रेडिट घटाने जा रहा हूं। इस तरह उसे उधार देने से पहले सोचना पड़ेगा।

ओह, मेरे निवेश का क्या होगा?

या सारे टैक्स...

हमें उत्पादन में बढ़ोत्तरी चाहिए।

श्रीमान मिनिस्टर! पाइपों में दबाव गिर रहा है और बैरोमीटर भी नीचे आ रहा है।

देखो, टैंक बिल्कुल खाली है।

ये अजीब सी वस्तु किसने लगाई?

इस तरह हम इसे मीलों दूर से देख सकते हैं।

यह एक बड़ा बिजली का बल्ब है जो सरकारी खर्च से चलता है।

इसे जल्दी उतारो वरना हम मारे जाएंगे।

बहाव बढ़ाओ वरना हम काम नहीं करेंगे।

हां, हां, अभी तो...

हूं! अब तो एक ही तरीका बचा है।

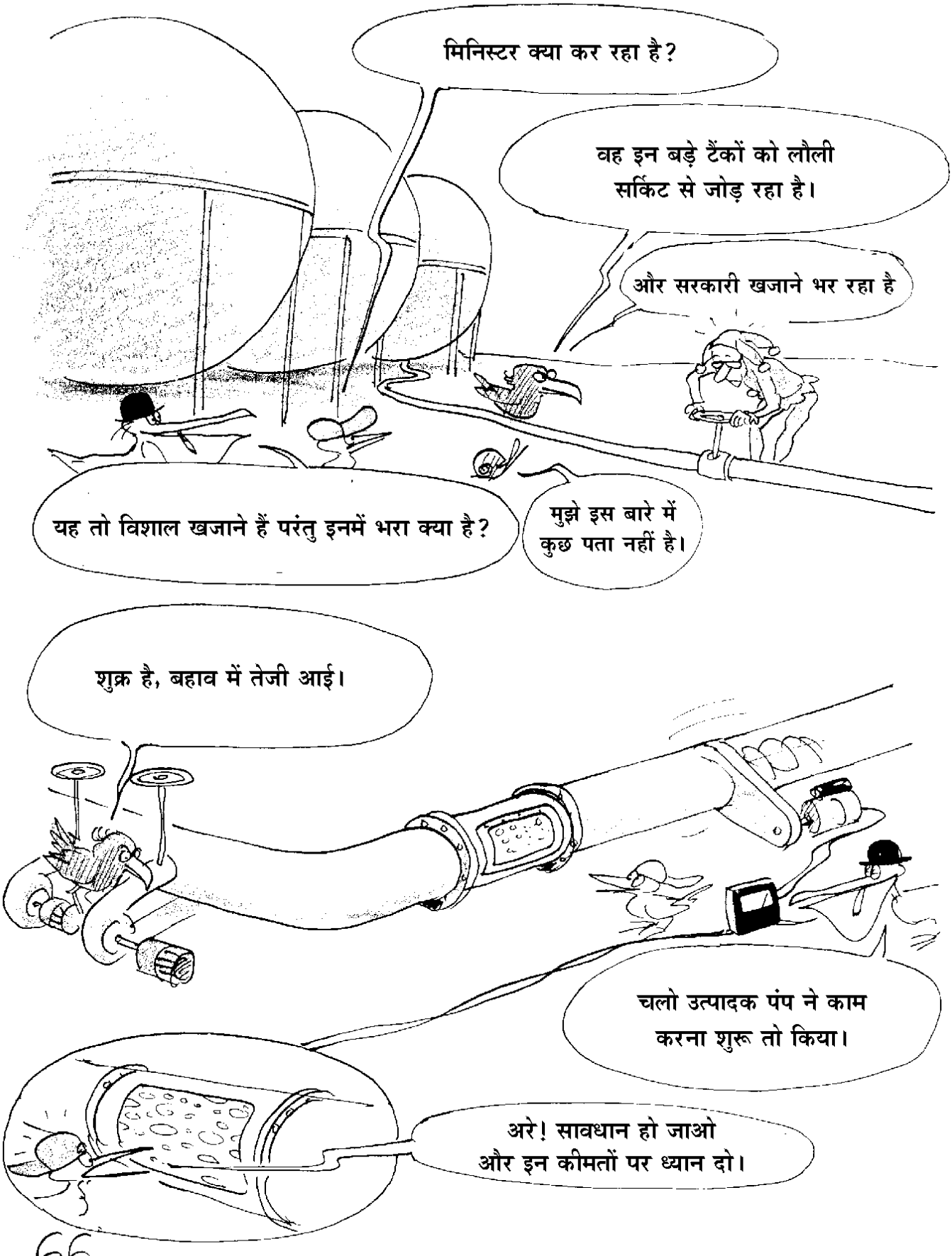
मिनिस्टर क्या कर रहा है?
वह इन बड़े टैंकों को लौली सर्किट से जोड़ रहा है।
और सरकारी खजाने भर रहा है
यह तो विशाल खजाने हैं परंतु इनमें भरा क्या है?
मुझे इस बारे में कुछ पता नहीं है।
शुक्र है, बहाव में तेजी आई।
चलो उत्पादक पंप ने काम करना शुरू तो किया।
अरे! सावधान हो जाओ और इन कीमतों पर ध्यान दो।

खैर! मशीन ठीक चल रही है
और पंप भी सही काम कर रहे हैं।
पर देखो, क्रय मशीन घटती जा रही है।

यह सब सामान्य नहीं है। कड़ी मेहनत के
बावजूद भी हमारे हाथ कुछ नहीं आ रहा।
SALAIRES

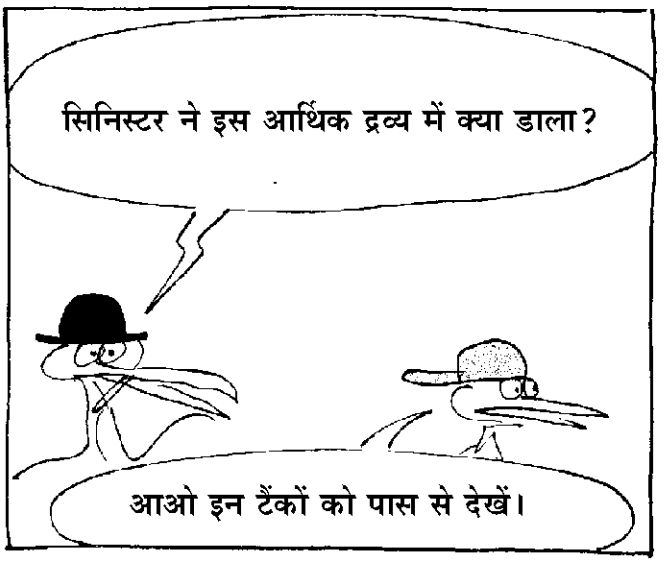
सिनिस्टर ने इस आर्थिक द्रव्य में क्या डाला?
आओ इन टैंकों को पास से देखें।

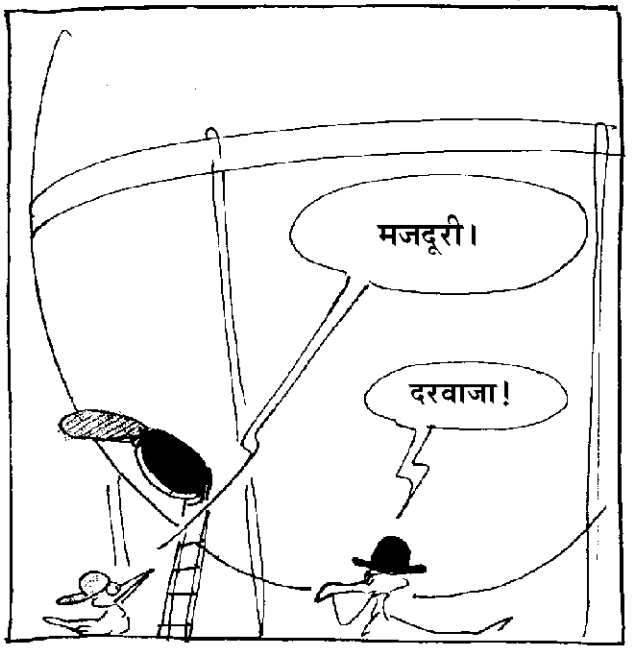
मजदूरी।
दरवाजा!

चलो, अंदर
चल कर देखें।

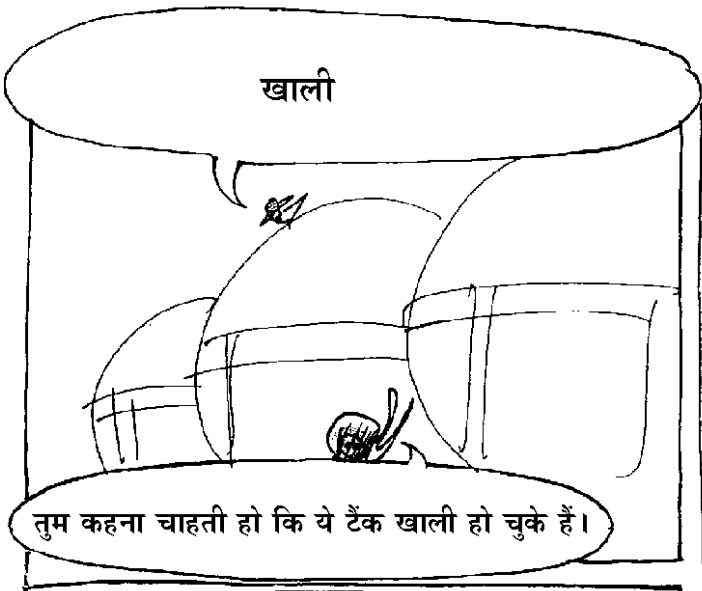
खाली
तुम कहना चाहती हो कि ये टैंक खाली हो चुके हैं।

नहीं, वे तो पहले से ही खाली थे।
एक तरह की शून्य आर्थिक व्यवस्था।

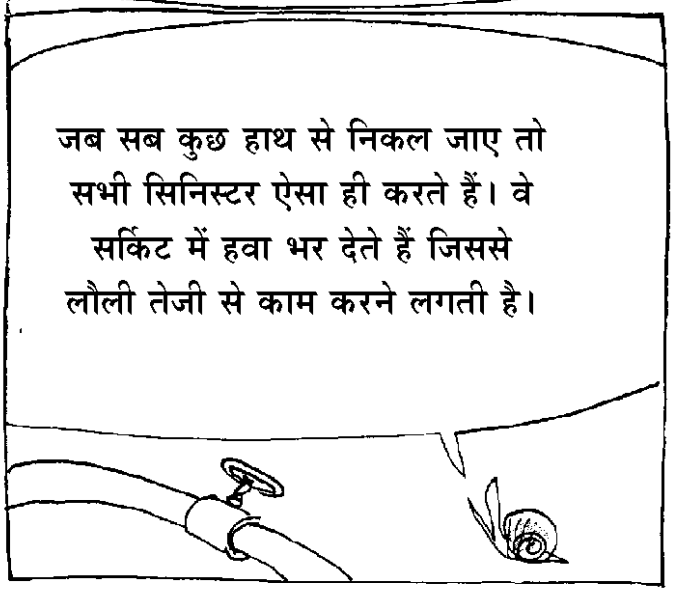
जब सब कुछ हाथ से निकल जाए तो सभी सिनिस्टर ऐसा ही करते हैं। वे सर्किट में हवा भर देते हैं जिससे लौली तेजी से काम करने लगती है।

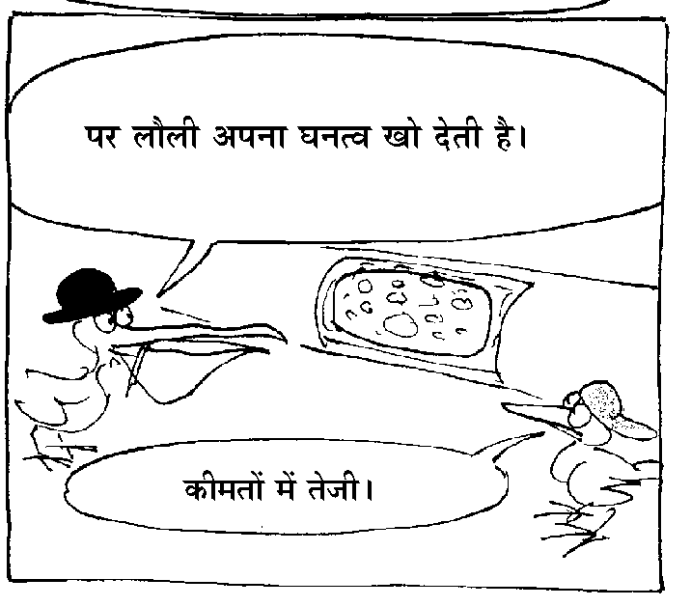
पर लौली अपना घनत्व खो देती है।
कीमतों में तेजी।

बचत में कमी।
पूंजी भी।

हाय! मैं भी अपनी बचत गंवा बैठी।
लौलीमेकर।

पूंजी का लुटेरा, दुष्ट कहीं का।
हम सही समय पर आए हैं।
लौलीमेकर मुझे तुम्हारी पूंजी चाहिए।
बचपना मत करो।
वो कहां गया।
ओह! यह तो जम गया।
वो एक चिट्ठी छोड़ गया है।
मजदूरी रोको कंपनी के लाभों व सामाजिक शुल्कों पर कर घटाओ और हमें निवेश के लिए छूट दो मिस्टर लौलीमेकर।
पर क्रय शक्ति गिर जाएगी। लोग शिकायत करेंगे और खपत पंप और भी धीमा चलने लगेगा।

आओ हम इस झिलमिल पैट्रोल की बचत करें।
लौली अब किसी काम का नहीं। बहाव जल्दी बढ़ाओ।
SALAIRES
हमने तो पहले ही कहा था।
पागलपन।
सब कुछ बरबाद।
वैसे जब मैं मिनिस्टर था तो हालात इतने बुरे नहीं थे।

उपसंहार या अंत में...

देखा एक नया उत्पादक यूनिट।
हमें और भी अपनाने होंगे।
मंत्री।
हां।
हां।
क्या हो यदि मैं दूसरा मंत्रीमंडल बनाऊं या राज्य का कोई सैक्रेटरी।
हमें अपना दिमाग लगाना होगा।

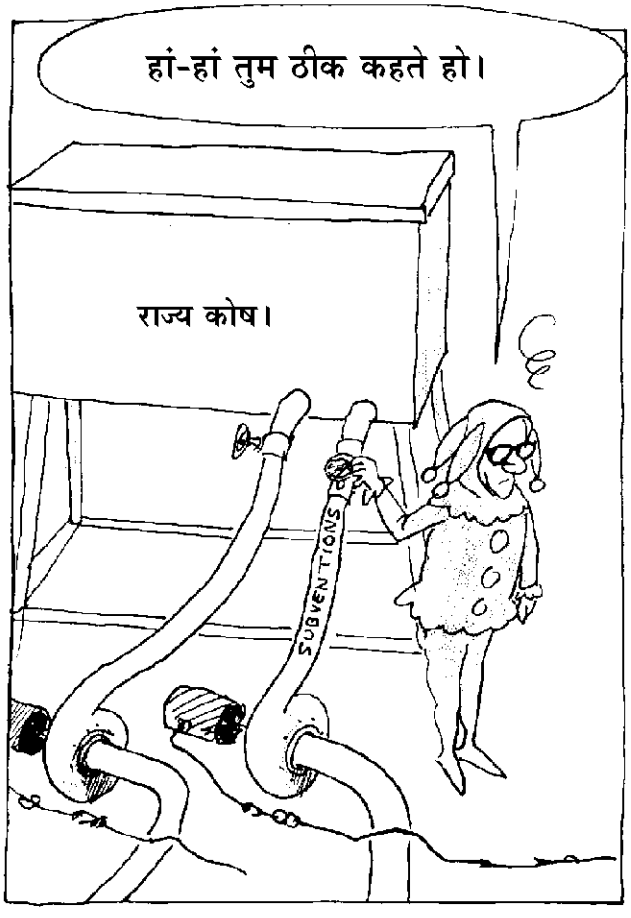
हां-हां तुम ठीक कहते हो।
राज्य कोष।
SUBVENTIONS

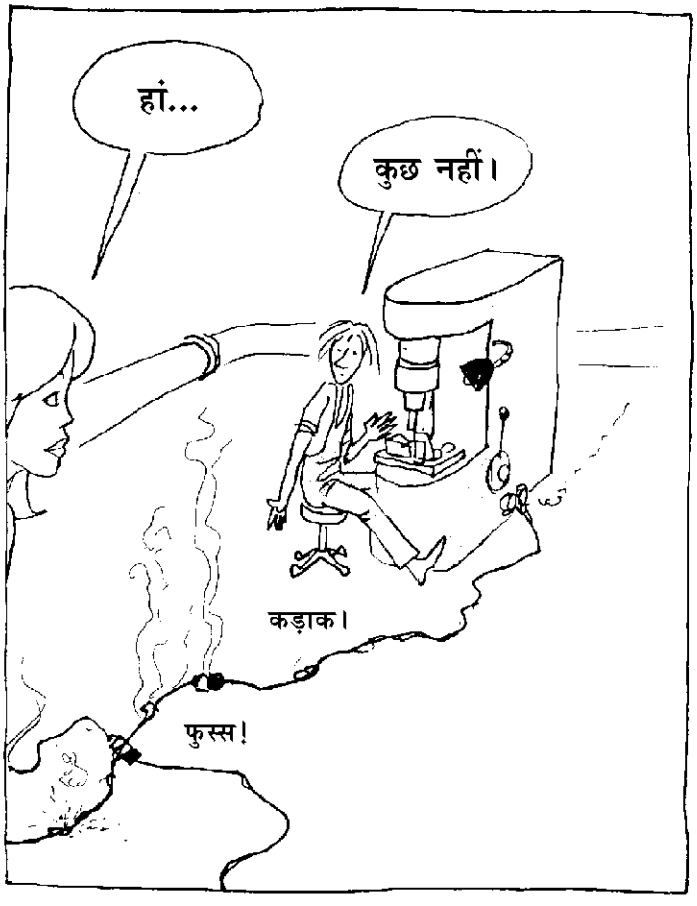
हां...
कुछ नहीं।
कड़ाक।
फुस्स!

वाहनों में होने वाला रिसाव ही इस देश की सबसे बड़ी परेशानी है।